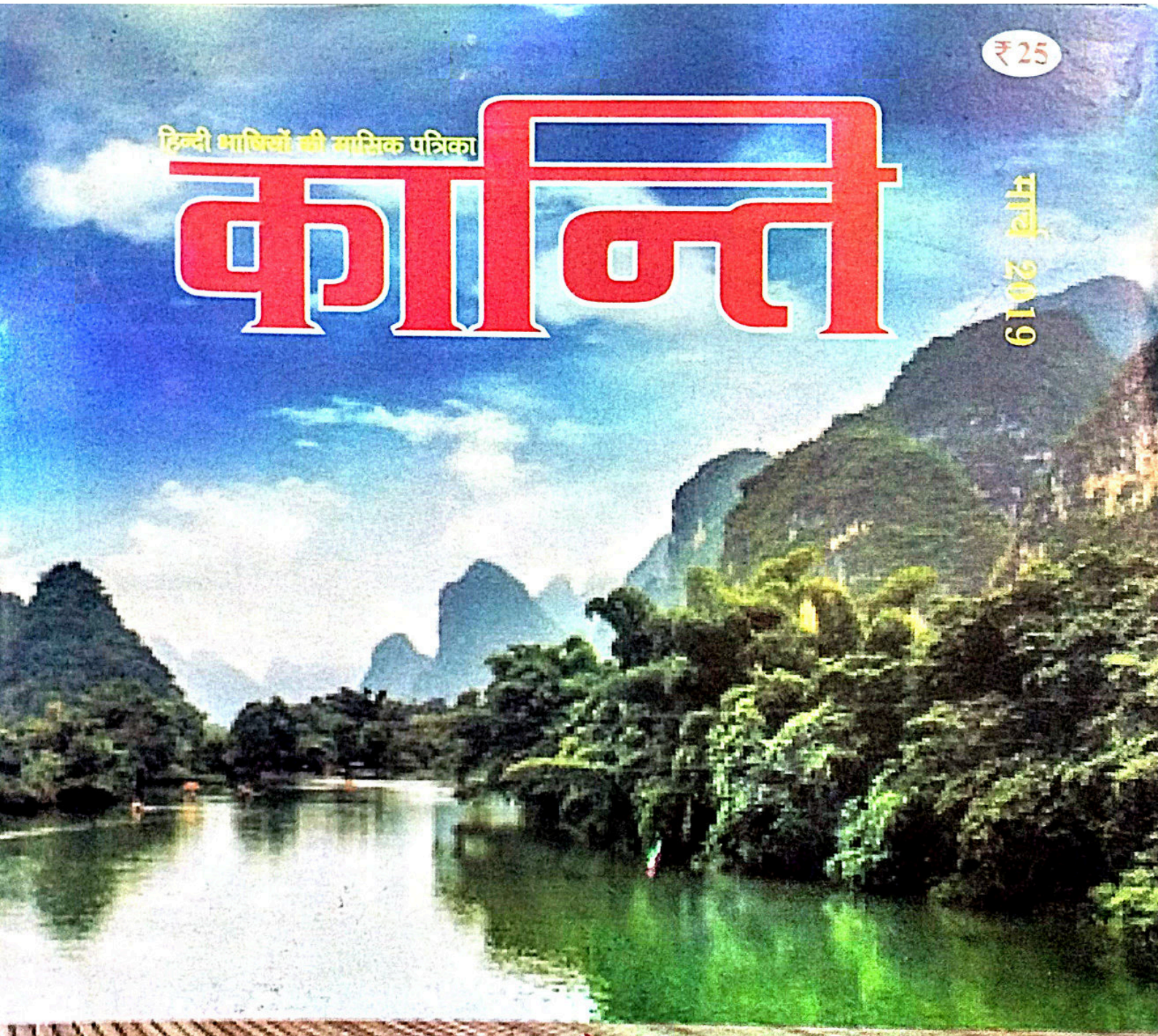

₹ 25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अप्रैल 2019

★ इस्लाम का संदेश
–मौलाना अबुल आला मौदूदी

★ मुहम्मद (स॰) : क़ुरआन की रोशनी में
–अबू नस्र फ़ारूक़

★ आतंकवाद और धर्म
–डॉ॰ शेख़ सईद

★ कुपोषण को बढ़ाने जंक फूड
–मोनिका शर्मा

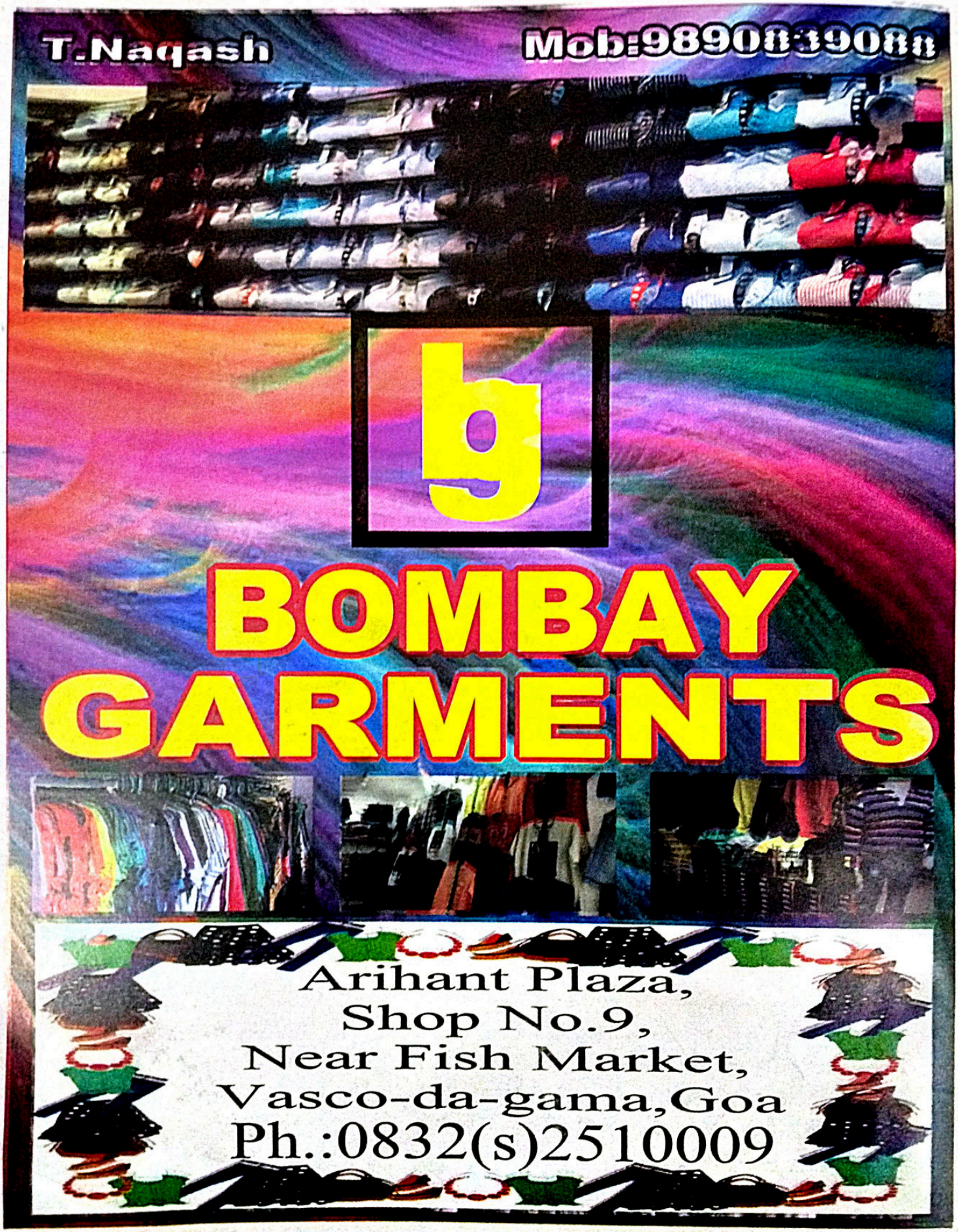
T.Naqash
Mob:9890839088
b
BOMBAY
GARMENTS
Arihant Plaza,
Shop No.9,
Near Fish Market,
Vasco-da-gama,Goa
Ph.:0832(s)2510009

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 28 अंक 9 मार्च 2019

अल्लाह चाहता है कि तुम पर दयादृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हट कर बहुत दूर जा पड़ो। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं
संपादकीय मामलों के लिए लिखें–
संपादक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार
एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–
प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय
011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-
वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-
पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल
यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर
वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ख़ुशामद का जाल

बेंजामिन फ्रेंकलिन
अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी थे और राजनेता भी ।
बचपन में,
फ़िलाडेल्फिया नगर के एक स्कूल में पढ़ते थे ।
समय पर स्कूल पहुंचना
उनका नित्य प्रति का काम था ।
कभी देर न की उन्होंने ।
स्कूल के रास्ते में लोहार की एक दुकान थी ।
एक दिन बालक बेंजामिन दुकान के पास रुक गया ।
लोहार ने बच्चे को देखा तो बोला–
कितने प्यारे बच्चे हो तुम,
ज़रा चाक घुमाने में मेरी सहायता तो करो ।
वह बच्चे की तारीफ़ करता रहा
और एक-एक करके
बहुत सारे काम उससे करा लिए ।
नतीजा यह हुआ कि बेंजामिन
उस दिन समय पर स्कूल नहीं पहुंच सका ।
देर से आने पर स्कूल में पिटाई भी हुई ।
एक तो काम कराते-कराते लोहार ने थका डाला
ऊपर से पिटाई भी हुई,
बालक बेंजामिन बीमार पड़ गया ।
एक सप्ताह तक वह कष्ट भोगता रहा
बड़े होकर
बेंजामिन ने आत्मकथा लिखी
इस घटना का, सविस्तार उल्लेख किया
और पाठकों को यह संदेश दिया,
मैंने उसी दिन
यह तय कर लिया
कि मैं कभी ख़ुशामद के जाल में नहीं फंसूंगा ।
अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए
अथक परिश्रम करते हुए आगे बढ़ूंगा,
और यह सब होगा,
ख़ुशामद के जाल में फंसे बिना
इसलिए कि ख़ुशामद,
राह खोटी करती है,
लक्ष्य तक पहुंचने नहीं देती ।

● डॉ० कौसर यज़दानी नदवी



कहां क्या है ?

खुशामद का जाल	–डॉ॰ कौसर यज़दानी नदवी	3
क़ुरआन ज्योति		5
खान-पान के आचार (हदीस मंजरी)		6
सृष्टि विनाश से बेख़बर न रहें (संपादकीय)		7
महागठबंधन बनाम गठबंधन (आपके पत्र)		9
"अंतिम ईशदूत आए" (कविता)	–'क़मर' रामनगरी	11
आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) (जीवन आदर्श)	–हमूदा अब्दलाती	13
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) : क़ुरआनी आयतों की रोशनी में	–अबू नस्र फ़ारूक़	17
आजकल, गुंडे, क़द (लघुकथाएं)	–डॉ॰ तारिक़ असलम तस्नीम	23
इस्लाम का संदेश (विशेष आयोजन)	–मौलाना अबुल आला मौदूदी	26-27
हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशिमी	35
इस्लाम में सहिष्णुता	–डॉ॰ अब्दुल मुग़नी	39
अल्पसंख्यकों के प्रति ज़िम्मेदारी	–नजमुस्साक़िब अब्बासी	41
आतंकवाद और धर्म (दृष्टिकोण)	–डॉ॰ शेख़ सईद	43
मिठाई वाला (कहानी)	–भगवती प्रसाद वाजपेयी	45
कुपोषण को बढ़ाते जंक फूड (स्वास्थ्य-चर्चा)	–मोनिका शर्मा	49
साइकिल के लाभ (बालवीथी)		50

कुरआन ज्योति

(88) मूसा ने[86] दुआ की, "ऐ हमारे रब ! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत[87] और माल[88] दे रखे हैं। ऐ रब ! क्या यह इसलिए है कि वे लोगों को तेरी राह से भटकाएं ? ऐ रब ! इनके माल ग़ारत कर दे और इनके दिलों पर ऐसी मुहर कर दे कि ईमान न लाएं जब तक दर्द भरा अज़ाब न देख लें।"[89] (89) अल्लाह ने जवाब में फ़रमाया, "तुम दोनों की दुआ क़ुबूल की गयी। जमे रहो और उन लोगों के तरीक़े की कदापि पैरवी न करो जो ज्ञान नहीं रखते।"[90]

–क़ुरआन, 10:88-89

86. ऊपर की आयतें हज़रत मूसा (अलैहि०) के आह्वान के आरंभिक युग से संबंध रखती हैं और यह दुआ मिस्र में निवास के बिल्कुल अन्तिम समय की है। बीच में कई वर्ष की लंबी दूरी है जिसके विस्तृत विवरण को यहां छोड़ दिया गया है। दूसरे स्थानों पर क़ुरआन मजीद में इस बीच के युग का भी विस्तृत विवेचन पाया जाता है।

87. अर्थात ठाठ, शान व शौकत और संस्कृति व सभ्यता की वह छवि जिसकी वजह से दुनिया उन पर और उनके तौर-तरीक़ों पर रीझती है और हर व्यक्ति का दिल चाहता है कि वैसा ही बन जाए, जैसे वे हैं।

88. अर्थात संसाधन, जिनके अधिक होने की वजह से वे अपने उपायों को व्यवहार में लाने के लिए हर प्रकार की आसानियां रखते हैं और जिनके अभाव के कारण सत्यवादी अपने उपायों को व्यवहार में लाने से विवश रह जाते हैं।

89. जैसा कि अभी हम बता चुके हैं, यह दुआ हज़रत मूसा (अलैहि०) ने मिस्र में निवास के ज़माने के बिल्कुल अन्तिम समय में की थी और उस समय की थी जब एक के बाद एक निशानियों को देख लेने और दीन की युक्ति पूरी हो जाने के बाद भी फ़िरऔन और उसके दरबारी सत्य की दुश्मनी पर पूरी हठधर्मी के साथ जमे रहे। ऐसे अवसर पर पैग़म्बर जो बद्दुआ करता है, वह ठीक-ठीक वही होती है जो कुफ़्र पर हठ करने वालों के बारे में स्वयं अल्लाह का फ़ैसला है, अर्थात यह कि फिर उन्हें ईमान का सौभाग्य न प्रदान किया जाए।

90. जो लोग वास्तविकता को नहीं जानते और अल्लाह के मस्लहतों को नहीं समझते वे असत्य के मुक़ाबले में सत्य की कमज़ोरी और सत्य स्थापित करने के लिए कोशिश करने वालों की बराबर विफलताएं और असत्य के पेशवाओं के ठाठ और उनकी सांसारिक उन्नति देखकर यह विचार करने लगते हैं कि शायद अल्लाह को यही मंज़ूर है कि उसके द्रोही दुनिया पर छाये रहें और शायद सर्वथा सत्य अल्लाह स्वयं ही असत्य के मुक़ाबले में सत्य का समर्थन करना नहीं चाहा। फिर वे नासमझ लोग अंततः अपनी बदगुमानियों के आधार पर यह नतीजा निकाल बैठते हैं कि सत्य स्थापित करने की कोशिश बेकार है और अब उचित यही है कि उस थोड़ी-सी धार्मिकता पर राज़ी होकर बैठ रहा जाए जिसकी अनुमति कुफ़्र और फ़िस्क़ की बादशाही में मिल रही हो। इस आयत में अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहि०) को और उनकी पैरवी करने वालों को इसी ग़लती से बचने की ताकीद फ़रमायी है। अल्लाह के इरशाद का मंशा यह है कि धैर्य के साथ इन्हीं प्रतिकूल परिस्थितियों में काम किये जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें भी वही भ्रम हो जाए जो ऐसी परिस्थितियों में अज्ञानियों और नासमझों को आमतौर से हो जाया करता है।



खान-पान के आचार

● हज़रत उमर बिन अबी सलमह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : ''अल्लाह का नाम लेकर अपने दाएं हाथ से खाओ और खाओ अपने सामने से ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''जब तुममें से कोई खाये तो उसे चाहिए कि अल्लाह तआला का नाम ले और यदि आरंभ में अल्लाह तआला का नाम लेना भूल जाए तो वह कहे 'बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू' (अल्लाह के नाम से इसका आरंभ भी और अंत भी) ।''

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : ''जब कोई व्यक्ति अपने घर में प्रवेश करे और प्रवेश करते समय और खाना खाते समय अल्लाह तआला को याद करे तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि तुम्हारे लिए न तो यहां रात व्यतीत करने की जगह है और न रात्रि का भोजन है । और जब कोई व्यक्ति घर में प्रवेश करे और प्रवेश करते समय अल्लाह तआला को याद न करे तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि तुम्हें रात व्यतीत करने की जगह मिल गयी । और जब व्यक्ति खाना खाते समय अल्लाह तआला को याद नहीं करता तो वह (शैतान) कहता है कि तुम्हें रात व्यतीत करने की जगह मिल गयी और रात्रि का भोजन भी ।''

–मुस्लिम

● हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि जब कभी हम अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के साथ खाने पर होते तो जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) खाना खाना आरंभ न करते और इसके लिए अपना हाथ न बढ़ाते, हम लोग खाने में हाथ न डालते । एक बार हम आपके साथ खाने पर थे कि एक लड़की आयी जैसे कि कोई उसको ढकेल रहा है, वह अपना हाथ खाने में डालने ही वाली थी कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उसका हाथ पकड़ लिया । फिर एक ग्रामीण आया जैसे उसे भी कोई ढकेल रहा है, (उसने भी खाने में हाथ डालना चाहा) आपने उसका भी हाथ पकड़ लिया । फिर अल्लाह के रसूल ने कहा : ''शैतान उस खाने को अपने लिए हलाल समझता है जिस पर अल्लाह तआला का नाम न लिया जाए । अत: वह इस लड़की को लाया ताकि उसके द्वारा खाने को अपने लिए हलाल कर ले, तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया (क्योंकि यह लड़की बिना अल्लाह का नाम लिए खाने वाली थी) फिर वह इस ग्रामीण को ले आया कि उसके द्वारा खाने को अपने लिए हलाल कर ले, तो मैंने उसका भी हाथ पकड़ लिया । उस (अल्लाह) की क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, उस शैतान का हाथ भी इन दोनों हाथों के साथ मेरे हाथ में है ।'' फिर आपने अल्लाह तआला का नाम लिया और खाना खाया ।

–मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

सृष्टि-विनाश से बेख़बर न रहें

पवित्र क़ुरआन में है–"स्त्री हो या पुरुष जो कोई ईमान लाकर अच्छे काम करेगा, तो हम (दुनिया में) उसे अच्छा पवित्र जीवनयापन कराएंगे और (क़यामत में) हम उन्हें अवश्य नेक कर्मों का बदला प्रदान करेंगे ।" (16:97) इस्लाम क़यामत के आने पर पूर्ण धारणा रखने की शिक्षा देता है । क़यामत का अर्थ है महाप्रलय, पुनरुत्थान । यह ऐसा दिन है जब मौजूदा सांसारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी । सारे जीवधारी मर जाएंगे । इसके बाद अल्लाह एक दूसरी सृष्टि की रचना करेगा । सारे लोग पुन: ज़िन्दा करके उठाये जाएंगे और उन्हें उनके अपने कर्मों का बदला दिया जाएगा । यही क़यामत का दिन होगा । पवित्र क़ुरआन में है–"इन्सान, पूछता है, 'आख़िर क़यामत का दिन कब आएगा ? तो जब निगाह पथरा जाएगी और चन्द्रमा प्रकाशहीन हो जाएगा, और सूर्य, चन्द्रमा मिलाकर एक कर दिए जाएंगे । उस दिन इन्सान कहेगा कहां भागकर जाऊं ? कदापि नहीं, वहां शरण लेने की कोई जगह न होगी । उस दिन तेरे रब ही के सामने जाकर ठहरना होगा । (75:6-12) क़यामत अचानक आएगी, मगर कब आएगी, सिर्फ़ अल्लाह को मालूम है । लेकिन इसके लक्षण ज़रूर हैं, जिनके आधार पर क़यामत की कल्पना की जाती है । इन्सान अपनी करतूतों से प्रकृति के उपादानों का विनाश कर रहा है, जो भी बिगाड़ और विनष्टीकरण का कारण है । आज इन्सान खुद प्राकृतिक संसाधनों को मिटाने पर लगा हुआ है । लगातार प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप कर इन्सान ने खुद को प्रकृति के सामने ला खड़ा किया है जहां प्रकृति उसका विनाश कर सकती है...जंगलों की कटाई कर असंतुलन पैदा किया जा रहा है...हवा को प्रदूषित कर दिया गया है, तो जल को भी इन्सान ने नहीं बख़्शा । जब से पृथ्वी बनी है, छिटपुट विनाश के कई चरण हुए हैं, कई प्रजातियां विलुप्त हुईं और कई नयी आयी हैं । भूगर्भीय साक्ष्य भी पृथ्वी पर कई प्राचीन विनाशकारी हलचल को दर्शाते हैं, चाहे वे भूकम्प के रूप में, ज्वालामुखी के रूप में, या फिर बाढ़ के रूप में जिसकी परिणति इससे पहले कई बार हिमयुग के रूप में हुई है, तो कई बार भयंकर बाढ़, तूफ़ान आदि के रूप में । यह अल्लाह की चेतावनियां और उसके वजूद की निशानियां भी हैं । वही स्रष्टा है और संहारक भी । अब विज्ञान भी इस तथ्य को मानने लगा है । भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान के मशहूर प्रोफ़ेसर स्टीफन हॉकिंग ने पिछले दिनों दुनिया को चेतावनी दी है कि जिस 'गॉड पार्टिकल्स' ने सृष्टि को स्वरूप और आकार दिया है, उसमें पूरी दुनिया को ख़त्म करने की भी क्षमता है । प्रोफ़ेसर हॉकिंग की 'संडे टाइम्स' (लंदन 7 सितम्बर 2014) को दी इस रिपोर्ट ने विज्ञान जगत में खलबली मचा दी है । वैज्ञानिक इस विषय को लेकर काफ़ी रोमांचित हैं । हॉकिंग का कहना है कि अगर वैज्ञानिक गॉड पार्टिकल्स को हाई टेंशन (उच्च तनाव) पर रखेंगे तो इनसे 'कैटास्ट्रॉफिक वैक्यूम' तैयार होगा । यानी इससे बुलबुलानुमा गैप तैयार होंगे । इससे ब्रह्मांड में गतिमान कण टूट-टूटकर उड़ने लगेंगे और आपस में टकराकर चूर-चूर हो जाएंगे । हॉकिंग ने कहा कि हिग्स बोसोन 100 अरब गीगा इलेक्ट्रॉन वोल्ट से अधिक की ऊर्जा पर अति स्थिर हो सकता है । ऐसी स्थिति में एक विनाशकारी निर्वात (वैक्यूम) बन जाएगा । बुलबुले के रूप में बना यह निर्वात प्रकाश की गति से विस्तार लेगा और पूरे ब्रह्मांड के विनाश का कारण बन जाएगा ।

हालांकि भौतिकविदों ने इस मसले को आपदा की आशंका मानकर किसी तरह का प्रयोग नहीं किया है ।

लेकिन प्रोफ़ेसर हॉकिंग ने दुनिया के वैज्ञानिकों को सचेत ज़रूर किया है । सैद्धांतिक भौतिकीविदों ने हिग्स बॉसन के बारे में लिखा है कि उनकी नयी किताब 'स्टारमस' में नील आर्मस्ट्रॉन्ग, बज़ एलड्रीन, क्वीन गिटारिस्ट ब्रायन में आदि के लेक्चर्स का चयन है । यूनीवर्स की हर चीज़ (तारे, ग्रह और हम भी) पदार्थ से बनी है। मैटर अणु और परमाणुओं से बना है और मास वह फिजिकल प्रॉपर्टी है, जिससे इन कणों को ठोस रूप मिलता है । मास जब ग्रैविटी से गुज़रता है, तो वह भार की शक्ल में भी मापा जा सकता है, लेकिन भार अपने आप में मास नहीं होता, क्योंकि ग्रैविटी कम-ज़्यादा होने से वह बदल जाता है । मास कहां से आता है, इसे बताने के लिए फिजिक्स में जब इन तमाम कणों को एक सिस्टम में रखने की कोशिश की गयी तो फार्मूले में गैप दिखने लगे । इस गैप को भरने और मास की वजह बताने के लिए 1965 में पीटर हिग्स ने हिग्स बोसोन या गॉड पार्टिकल का आइडिया पेश किया । क़यामत की धारणा धर्म-ग्रंथों में मौजूद है । इस विषय पर इस्लाम में विशद विवरण है । ईसाई धर्म में भी क़यामत की धारणा विद्यमान है । हिन्दू धर्म में भी महाप्रलय का उल्लेख है । अन्य धर्म-ग्रंथों के साथ ही महाभारत में कलियुग के अंत में प्रलय होने का ज़िक्र है, लेकिन यह किसी जल-प्रलय से नहीं बल्कि धरती पर लगातार बढ़ रही गर्मी से होगा । महाभारत के वनपर्व में उल्लेख मिलता है कि सूर्य का तेज़ इतना बढ़ जाएगा कि सातों समुद्र और नदियां सूख जाएंगी । संवर्तक नाम की अग्नि धरती को पाताल तक भस्म कर देगी । वर्षा पूरी तरह बंद हो जाएगी । सब कुछ जल जाएगा, इसके बाद फिर बारह वर्षों तक लगातार बारिश होगी । जिससे सारी धरती जलमग्न हो जाएगी । लगभग ढाई सौ साल पहले के चर्चित भविष्यवक्ता नास्त्रेस्देमस की इस बारे में भविष्यवाणी मौजूद है । नास्त्रेस्देमस ने प्रलय के बारे में बहुत स्पष्ट लिखा है कि मैं देख रहा हूं कि एक आग का गोला पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है, जो धरती से मानव के काल का कारण बनेगा । एक अन्य जगह वे लिखते हैं कि एक आग का गोला समुद्र में गिरेगा और पुरानी सभ्यता के समस्त देश तबाह हो जाएंगे । माया कैलेंडर के अनुसार, 21 दिसम्बर 2012 के बाद दुनिया को नहीं होना चाहिए, हालांकि यह भविष्यवाणी ग़लत साबित हो चुकी है । साउथ ईस्ट मेक्सिको के माया कैलेंडर में 21 दिसम्बर 2012 के बाद की तिथि का वर्णन नहीं है । कैलेंडर उसके बाद पृथ्वी का अंत बता रहा है। माया कैलेंडर के मुताबिक़, 21 दिसम्बर 2012 में एक ग्रह पृथ्वी से टकराएगा, जिससे सारी धरती ख़त्म हो जाएगी। क़रीब 250 से 900 ईसा पूर्व माया नामक एक प्राचीन सभ्यता स्थापित थी । ग्वाटेमाला, मैक्सिको, होंडुरास तथा यूकाटन प्रायद्वीप में इस सभ्यता के अवशेष खोजकर्ताओं को मिले हैं । कहा जाता है कि माया सभ्यता के काल में गणित और खगोल के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ था । अपने ज्ञान के आधार पर माया लोगों ने एक कैलेंडर बनाया था । कहा जाता है कि उनके द्वारा बनाया गया कैलेंडर इतना सटीक निकला है कि आज के सुपर कंप्यूटर भी उसकी गणनाओं में 0.06 तक का ही फ़र्क़ निकाल सके और माया कैलेंडर के अनेक आकलन, जिनकी गणना हज़ारों सालों पहले की गयी थी, सही साबित हुए हैं । मगर क़यामत की तारीख़ के सिलसिले में माया कैलेंडर असफल सिद्ध हो चुका है । फिर भी अमेरिका के कुछ वैज्ञानिकों ने कुछ समय पहले घोषणा की है कि 13 अप्रैल 2036 को पृथ्वी पर प्रलय हो सकता है । खगोलविदों के अनुसार अंतरिक्ष में घूमने वाला एक ग्रह एपोफिस 37014.91 किमी/प्रति घंटा की रफ़्तार से पृथ्वी से टकरा सकता है । इस प्रलयंकारी भिड़ंत में हज़ारों लोगों की जान भी जा सकती है । हालांकि नासा के वैज्ञानिकों का कहना है कि इसे लेकर घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है । हक़ीक़त यह है कि क़यामत का आना यक़ीनी है, मगर यह कब आएगी, इसका ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है । अतः पारलौकिक जीवन को सफल बनाने के लिए अनिवार्य है कि इन्सान इस दुनिया में सुकर्म करे, जिससे पालनकर्ता प्रभु उससे राज़ी हो ।

महागठबंधन बनाम गठबंधन

सत्ता के गलियारों में यह मान्यता प्रचलित रही है कि केन्द्रीय सिंहासन का रास्ता उत्तर प्रदेश से ही निकलता है । इस राज्य में लोकसभा की अस्सी सीटें हैं जो राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों को केन्द्रीय सत्ता पर क़ाबिज़ अथवा बेदख़ल कर सकतीं हैं । उत्तर प्रदेश के राजनैतिक मैदान को टटोला जाए तो इस प्रदेश में धार्मिक, जातिगत, आर्थिक, सामाजिक व किसानों से जुड़े हुए मुद्दों की बहुतायत है, जिसमें विकास एक अहम मुद्दा रहता है, जिसका चुनाव के दौरान शोर-शराबा तो बहुत रहता है परंतु यह मुद्दा मतदाताओं के दृष्टिकोण में उतना बड़ा कारक नहीं रहा है जिसके आधार पर अंतिम राय स्थापित किये जाएं ।

विगत विधानसभा चुनाव में अखिलेश के उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने की क़वायद की क्या दुर्गति हुई है, यह शायद ही किसी के नज़रों से छिपी हो । कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश की सियासी ज़मीन पर विकास के बलबूते वोटों की उगाही अब तक एक कमज़ोर धारणा ही साबित होती रहीं है । इसके स्थान पर उत्तर प्रदेश के राजनीतिक पटल पर धार्मिक व जातिगत आधार दो ऐसे मत उपजाऊ ध्रुव रहे हैं, जिनके इर्द-गिर्द समूची राजनीति की बिसात बिछाई जाती हैं । जो दलों एवं प्रत्याशियों में विकासवादी सोच, आदर्श आचरण, नैतिकता एवं कर्तव्यनिष्ठा की छवियों को दरकिनार करते हुए मात्र ख़ेमों के वर्चस्व के आधार पर पूरी राजनीति रस्साकसी तय करती हुई प्रतीत होती है ।

विगत आम चुनाव में देखा जाए तो भाजपा ने उत्तर प्रदेश में लगभग सभी विरोधी दलों का सूपड़ा साफ़ करते हुए अपनी सीटों की संख्या का लगभग एक चौथाई सीट इसी प्रदेश से बटोरकर केन्द्रीय सत्ता में भारी बहुमत के साथ क़ाबिज़ हुई । यह परिणाम भाजपा को अनायास ही नहीं प्राप्त हुएं, बल्कि इसके पीछे शीर्ष स्तर की रणनीति थी, जो लोकलुभावन योजनाओं एवं जनभावनाओं को उछाल कर उन्हें जनादेश में परिवर्तित करने में पूर्ण रूप से सफल हुई। विगत चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वाराणसी से चुनाव मैदान में कूदना एक अतिमहत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय था, जिसने सूबे की समूचे राजनीति को प्रभावित करते हुए भाजपा को 71 सीटों की भारी जीत दिलाई । यह जीत इतनी व्यापक थी कि भाजपा दलित एवं पिछड़ा वर्ग को भी अपने पाले में आकर्षित करने में सफल हुई और इसका परिणाम यह हुआ कि बहुजन समाज पार्टी जो प्रदेश की राजनीति में गहरा दख़ल रखतीं हैं, खाता तक नहीं खुल पाया ।

उत्तर प्रदेश की राजनीतिक स्थितियों का विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि एक ओर जातिगत समीकरणों के बूते सूबे की मुख्य राजनीतिक पार्टियां– समाजवादी पार्टी एवं बहुजन समाज पार्टी अपने पक्ष को मजबूत करते हैं, वहीं दूसरी ओर भाजपा धार्मिक ध्रुवीकरण के आधार पर अपनी राजनीतिक नैया को पार लगाना चाहती हैं । सही मायनों में धार्मिक ध्रुवीकरण भाजपा की प्राणवायु के समान है, जो गांधी की हत्या के बाद हुए आम चुनाव में दो सीटों पर सफल होने वाली भाजपा को अयोध्या प्रकरण से जुड़ाव के कारण आगामी आम चुनाव में केन्द्रीय भूमिका में ला खड़ा कर दिया । भारतीय राजनीति में उत्तर प्रदेश की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि यह ज़मीन जातिगत व धार्मिकता का ऐसा अखाड़ा है जो देश के समूचे राज्यों की राजनैतिक हलचलों को प्रभावित करता है ।

इस बात में कोई संशय नहीं है कि उत्तर प्रदेश में 2014 से 2017 तक मोदी फ़ेक्टर पूरी तरह से हावी रहा । इस अवधि में मोदी लहर ने एन॰डी॰ए॰ कुनबे के लिए समस्त प्रतिरोध को दरकिनार करते हुए एकतरफ़ा जीत दर्ज किया, परंतु मध्यावधि चुनाव में मायावती-अखिलेश व आर॰एल॰डी॰ गठबंधन ने भाजपा को कैराना, फूलपुर व गोरखपुर में जो सियासी पटखनी दी, उस आधार पर आगामी आम चुनाव में मोदी क़ाफ़िला के लिए दिल्ली दूर दिखाई पड़ता है । गोरखपुर की सीट जिस पर भाजपा का लंबे अंतराल से दबदबा रहा और जिस सीट से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की साख दांव पर लगी रही हैं, उसके खोने का स्पष्ट संकेत यही है कि भाजपा के लिए आगामी आम चुनाव एक तरफ़ा न होकर कहीं अधिक संघर्षपूर्ण एवं जटिल होगा । यह मध्यावधि चुनाव मायावती-अखिलेश गठबंधन का लिटमस टेस्ट था जो सभी दृष्टिकोणों से कारगर साबित होते हुए माया-अखिलेश की राजनीतिक जुगलबंदी का बीजारोपण करता हुआ दिखायी पड़ता है । मध्यावधि चुनाव परिणामों ने

गठबंधन को 2019 के आम चुनाव में साझा रणनीति के तहत राजनीतिक मैदान में ज़ोर आजमाइश की घोषणा करने के लिए विवश कर दिया, हालांकि सपा-बसपा का यह राजनीतिक गलबहियां सही अर्थों में पुनर्मिलन ही कहलाएगा, क्योंकि पूर्व में 1993 के विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र सपा-बसपा का राजनैतिक गठजोड़ मुलायम-कांशीराम की जोड़ी के रूप में सामने आ चुका है । यह गठबंधन भाजपा की चुनावी रणनीति व समीकरणों को ध्वस्त करते हुए उत्तर प्रदेश की सत्ता पर बहुमत के साथ क़ाबिज़ हुआ और दलित वर्ग पिछड़ा वर्ग के राजनीतिक आंदोलन को नवीन आयाम प्रदान किया । परंतु यह गठबंधन महज़ दो वर्ष के लघु अंतराल के पश्चात 1995 में दोनों दलों के अति महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति में घिरते हुए ढेर हो गया और साथ में लखनऊ गेस्ट हाउस कांड़ के शीर्षक के अंतर्गत संरक्षित एक ऐसा राजनैतिक दाग़ दे गया जिसके टीस से मायावती आज भी कराह उठती है ।

यह बात बहुत हद तक स्पष्ट है कि आगामी आम चुनाव बसपा के लिए वजूद की लड़ाई है । इसलिए मायावती को पूर्व की घटनाक्रमों से इतर भविष्य की चिंता ने अखिलेश के संग सपा-बसपा पार्ट-2 के सिक्वल के लिए मजबूर कर दिया । वैसे भी राजनीति में दोस्ती-दुश्मनी ज़मीनी आधार एवं अवसरों के हिसाब से तय होते रहे हैं जिसमें सपा-बसपा गठबंधन कोई अपवादस्वरूप नहीं है । विगत आम चुनाव में भाजपा को 43, बसपा को 20, सपा को 22 और कांग्रेस का 08 प्रतिशत मत प्राप्त हुए । यदि सपा-बसपा के प्राप्त मतों के प्रतिशत को एकीकृत रूप में देखा जाए तो यह लगभग 42 प्रतिशत है अर्थात भाजपा से मात्र एक प्रतिशत कम । इसी समीकरण के आधार पर आगामी आम चुनाव में सपा-बसपा का वोट बैंक एक-दूसरे में पूरी तरह संपरिवर्तित होते हैं तो यह गठबंधन भारी उलटफेर करने में सक्षम साबित होगा और इनका केन्द्रीय राजनीति में गहरा दख़ल होने की प्रबल संभावना है । ए॰बी॰पी॰-सी॰एस॰डी॰एस॰ के सर्वेक्षण के अनुसार उत्तर प्रदेश में महागठबंधन को लाभ मिल सकता है । रुझानों में एन॰डी॰ए॰ को 8 प्रतिशत वोट शेयर का नुक़सान होत दिख रहा है ।

2014 के चुनाव में क़रीब 43 फ़ीसदी वोट हासिल करने वाले एन॰डी॰ए॰ को हाल की स्थिति में होने वाले लोकसभा चुनाव के दौरान 35 फ़ीसदी वोट मिलने की बात कही जा रही है, जिसके कारण उसे क़रीब 8 फ़ीसदी वोट का नुक़सान होता दिख रहा है । सर्वे में एन॰डी॰ए॰ को 35 प्रतिशत, यू॰पी॰ए॰ को 12 प्रतिशत और अन्य (एस॰पी॰-बी॰एस॰पी॰-अन्य दल) को क़रीब 53 प्रतिशत वोट मिलने की बात कही जा रही है । वहीं सर्वे में बी॰जे॰पी॰ को गोरखपुर और फूलपुर में हुई हार के कारण नुक़सान होता भी दिख रहा है । वहीं दूसरी ओर सर्वे में महागठबंधन की स्थिति में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को क़रीब 4 फ़ीसदी वोट का फ़ायदा मिलता दिख रहा है । यदि रुझानों को सीटों के आधार पर देखा जाए तो सपा-बसपा गठबंधन लगभग पचास सीटों को प्राप्त करने में सक्षम प्रतीत होता है । कुल मिलाकर भविष्य में यह देखना दिलचस्प होगा कि ऊंट किस करवट बैठेगा, लेकिन आगामी लोकसभा के चुनावी बयार में भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश में पाने के लिए कुछ भी नहीं है और खोने के लिए बहुत कुछ है ।

जुनैद अली
सतना, म॰प्र॰

उदारतापूर्ण आचरण की शिक्षा

इस्लाम शांति, दया, करुणा तथा सहिष्णुता का धर्म है । यह सभी के साथ उदारतापूर्ण आचरण के लिए संतुलन साधने और समानता का भाव अपनाने की शिक्षा देता है । यह संपूर्ण संयम से जीवन जीने का संदेश देता है ।

क़ुरआन का स्पष्ट संदेश है कि, "भलाई करो, क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है । इस ज़मीन पर भ्रष्टाचार मत अपनाओ । अल्लाह भ्रष्टाचारियों को पसन्द नहीं करता ।"
(क़ुरआन, 28:77)

मानवता क़ुरआन के फ़रमान का सारतत्व है । ज़ो भलाई और अच्छाई करेगा उसको उसका पूरा-पूरा बदला मिलेगा और जो बुराई करेगा उसके ऊपर उसका बोझ होगा ।

इस्लाम का अर्थ अमन और सलामती है । आज पूरी दुनिया को अमन, इत्तिफ़ाक़, इत्तिहाद और भाईचारे की ज़रूरत है । इस्लाम अत्याचार का विरोधी है और बेगुनाहों पर ज़ुल्म का पुरज़ोर विरोध करता है । क़ुरआन में नसीहत है कि ज़मीन पर फ़साद न फैलाओ क्योंकि अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को दोस्त नहीं रखता । अल्लाह उनका ख़याल रखता है जो दूसरों पर रहम करते हैं और उनके साथ भलाई का व्यवहार करते हैं ।

सलीम अहमद
जामिया नगर, नयी दिल्ली

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)– "अंतिम ईशदूत आए"

■ 'क़मर' रामनगरी

जग से अत्याचार मिटाने अंतिम ईश्वर दूत आए
न्याय को जग को पाठ पढ़ाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

धर्म पे चलने और चलाने अंतिम ईश्वर दूत आए
ईश्वर का संदेश सुनाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

मरु भूमि को स्वर्ग बनाने अंतिम ईश्वर दूत आए
बस्ती-बस्ती फूल खिलाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

मानवता का मार्ग दिखाने अंतिम ईश्वर दूत आए
मानव को मानव से मिलाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

असहायों को गले लगाने अंतिम ईश्वर दूत आए
पीड़ितजन का दर्द बंटाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

नाम है जिनका 'नराशंस' वेदों के 'मुहम्मद' कुरआं में
दया वृष्टि जग पर बरसाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

कौन है ईश्वर ? क्या है जीवन ? क्यों मानव की सृष्टि हुई ?
इन मौलिक तथ्यों को बताने, अंतिम ईश्वर दूत आए ।

कुरआनी जीवन विधान के द्वारा विश्व के जन-जन को
महा प्रभु ईश्वर से मिलाने, अंतिम ईश्वर दूत आए ।

हिंसा, पशुता, कलह, द्वेष से भरी हुई जब दुनिया
प्रेम प्रीति की रीति सिखाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

अधर्म की गहरी निद्रा में मग्न थी जब मानव जाति
उसको उस निद्रा से जगाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

भूल चुकी थी सारी दुनिया अपने सृजन हारको जब
महा प्रभु की याद दिलाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

लुप्त हो चुकी थीं शिक्षाएं जब कुल ऋषियों मुनियों की
पुनः सनातन धर्म सिखाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

कुल मानव जब भटक रहे थे सत्य डगर से दूर पड़े
उनको सीधी डगर पे लाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

लहूलुहान था धरती का जब वक्ष स्थल प्रहारों से
शांति, सुधा, अमृत बरसाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

मदिरा, जुआ, कुकर्मों में जब लिप्त थी आदम की संतान
उसे पाप से मुक्त कराने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

अत्याचारी, निरंकुश राजे महाराजों का राज था जब
जग में रब का राज रचाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

प्रताड़ित थीं अपमानित थीं पुरुषों द्वारा स्त्रियां
अबलाओं का मान बढ़ाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

ऊंच-नीच और छुआछूत का भेद था मानव मानव में
सबको एक समान बनाते अंतिम ईश्वर दूत आए ।

गहन पाप के अंधकार में 'क़मर' था डूबा कुल संसार
पुण्य कर्म की ज्योति जलाने अंतिम ईश्वर दूत आए ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया– "क़ियामत के दिन मेरी सिफ़ारिश से वही व्यक्ति लाभ उठा सकता है, जिसने अपने मन और प्राण की पूर्ण शुद्धता एवं एकाग्रता के साथ "ला इलाह इल्लल्लाह" (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य एवं प्रभु नहीं है) कहा हो ।"

(बुख़ारी)

A Well Wisher

PATNA

आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ हमूदा अब्दलाती

इस्लाम के अनुयायियों की आस्था है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के अंतिम रसूल हैं इस पर बहुत सारे लोगों को ग़लतफ़हमी हुई, अत: इसका स्पष्टीकरण ज़रूरी है । इस आस्था का किसी भी प्रकार यह अर्थ नहीं होता कि अल्लाह ने अपनी दया-कृपा का द्वार बन्द कर दिया है, या अब उसने अवकाश ग्रहण कर लिया है । यह आस्था किसी भी महान धार्मिक व्यक्तित्व के बनने-संवरने में रुकावट खड़ा नहीं करती और न महान आध्यात्मिक नेता के उभरने को वर्जित करती है । इसका अर्थ यह भी नहीं है कि सारी दुनिया को नज़रअन्दाज़ करके अल्लाह ने अरब क़ौम पर महान और अन्तिम उपकार किया है । अल्लाह किसी क़ौम, नस्ल या युग से पक्षपात नहीं करता, उसका कृपा-द्वार हर दम खुला है और सदा के लिए उनकी पहुंच के भीतर है जो उसको प्राप्त करने की खोज में रहते हैं । वह तीन प्रकार से इन्सानों को संबोधित करता है–

1. अंत: प्रेरणा द्वारा, जो अल्लाह धार्मिक व्यक्तियों के मन या मस्तिष्क में सुझाव या विचार के रूप में डाल देता है ।

2. किसी पर्दे के पीछे से दृश्य या दर्शन के रूप में जब योग्यतम व्यक्ति नींद या आलमेजज़्ब (आत्म विस्मृति) में हो, और–

3. ईश्वरीय संदेशवाहक हज़रत जिबरील द्वारा प्रत्यक्ष ईश्वरीय सम्वाद के साथ, जिन्हें ईश्वर के चुने दूत तक पहुंचाने के लिए अवतरित किया जाता है । (क़ुरआन 42:51) यह आख़िरी रूप उच्च कोटि का है और इसी रूप में क़ुरआन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित हुआ । यह सीमित है केवल ईशदूतों तक, जिनमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम हैं और ईशदूतत्व की अंतिम कड़ी हैं । लेकिन इससे पहले उपरोक्त प्रथम और द्वितीय रूपों के मौजूद होने का इन्कार नहीं होता, मगर यह कि जिसे अल्लाह संबोधित करना चाहे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईशदूतत्व का सिलसिला समाप्त करके अल्लाह ने न तो मानवजाति के साथ अपना संबंध विच्छेद किया है और न मानवजाति से अपनी दिलचस्पी समाप्त की है । ऐसा भी नहीं है कि मानवजाति को ख़ुदा की तलाश से रोक दिया गया हो या उसकी अंत:प्रेरणा की राह में रुकावटें खड़ी कर दी गयी हैं, बल्कि इसके विपरीत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को ईशदूतत्व की आख़िरी कड़ी और क़ुरआन को ईशवाणी का अंतिम संस्करण क़रार देकर अल्लाह ने मानवजाति के बीच संवाद-संचार का एक स्थायी माध्यम स्थापित किया है, मानो मार्गदर्शन का सदा चमकने वाला प्रकाश स्तंभ है जो स्थापित कर दिया गया है ।

इन तर्कों के अलावा और दूसरे तर्क भी हैं जिनसे पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा के अंतिम पैग़म्बर हैं । उनमें से कुछ का उल्लेख यहां असंगत न होगा ।

1. क़ुरआन खुले शब्दों में एलान करता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा के पैग़म्बर के रूप में संपूर्ण मानवजाति की ओर भेजे गये हैं, उस ख़ुदा के पैग़म्बर के रूप में, जिसकी बादशाही धरती और आसमानों पर है । (7:158) वह यह भी एलान करता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तमाम जीवधारियों, मानव तथा जीव जन्तु की ओर समान रूप से 'रहमत' बनाकर भेजे गये हैं (21:107) और यह कि ख़ुदा के पैग़म्बर और पैग़म्बरों की आख़िरी कड़ी हैं (33:) क़ुरआन ईशवाणी है और जो कुछ भी वह कहता है ईश्वरीय सत्य है, जिस पर हर एक इस्लाम धर्मावलंबी ईमान रखता है, और जिस पर हर एक आदमी को चिंतन करना ही चाहिए ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का पैग़ाम मात्र राष्ट्रीय पुनरुत्थान या कोई सामूहिक इजारादारी या गुलामी और अत्याचार से सामयिक रूप से मुक्ति दिलाने के समान नहीं है, और न यह 'ऐतिहासिक क्रम से असंबद्ध' तथा 'आकस्मिक परिवर्तन' की बात ही है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का पैग़ाम एक सार्वभौम पुनरुत्थान, एक सार्वजनिक 'रहमत' क्षेत्रीयता से उच्च और सदा सर्वदा के लिए बाक़ी रहने वाला आध्यात्मिक ज्ञान था और निस्संदेह अब भी है । यह पिछले ईश्वरीय

संदेशों का विकसित रूप है तथा सभी भूतपूर्व ईश्वरीय ग्रंथों का संतुलित समावेश है, यह रंग, नस्ल, युग तथा सारे क्षेत्रीय भेदभाव की हदबंदियों को मलियामेट कर देता है । यह सभी युग-युगांतर के मानवों को संबोधित करता है । यह तो बस वही कुछ है जो मानव की अपनी आवश्यकता है ।

इस्लाम धर्मावलंबियों का विश्वास कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा के आख़िरी नबी हैं, इसलिए है कि क़ुरआन इसका गवाह है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संदेश अपने आप में एक सच्चे, सार्वभौम तथा निर्णायक आस्था की उच्चतम विशेषताएं रखता है ।

2. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने स्वयं ही कहा कि वह अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर थे । एक इस्लाम धर्मावलंबी अथवा कोई भी अन्य धर्मावलंबी, इस कथन की सत्यता पर शंका व्यक्त नहीं कर सकता, इसलिए कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का पूरा जीवन सच्चाई तथा ईमानदारी से परिपूर्ण था, न केवल इस्लाम धर्मावलंबियों की दृष्टि में, बल्कि उनके कट्टर से कट्टर शत्रुओं की दृष्टि में भी उनका चरित्र, उनकी आध्यात्मिक संपूर्णता और उनका सांसारिक सुधारान्दोलन मानव-इतिहास में अद्वितीय है । इतिहास हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समान किसी व्यक्ति को पेश नहीं करता और न भविष्य में ही इसकी आशा है । उन्होंने कहा कि वह ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर हैं, क्योंकि यह ईश्वरीय सत्य था । इसलिए नहीं कि वह किसी व्यक्तिगत लाभ के इच्छुक थे, उनका विरोध भी हुआ, परन्तु वह विचलित न हुए, विरोधियों पर उन्हें विजय मिली, मगर विजय ने उन्हें बिगाड़ा नहीं, सफलताओं ने उनकी उच्च स्तरीय नैतिकता को कमज़ोर नहीं किया और न सत्ता पाकर ही वह पथ-भ्रष्ट हुए । उनका व्यक्तित्व इन बातों से बहुत उच्च था । उनके शब्द ज्ञान व ईमान का प्रकाश स्तंभ बनकर आज भी मानव का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं ।

3. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही एक ऐसे पैग़म्बर हैं जो अपने जीवनकाल में ही अपने मिशन में सफल हुए तथा जिन्होंने अपने दायित्व को पूरा किया । आपके जीवन में ही क़ुरआन ने एलान कर दिया था कि इस्लाम धर्म संपूर्ण हो गया, इस्लाम के मानने वालों पर ख़ुदा की नेमत (कृपा) पूरी हो चुकी है तथा वह्य की सुरक्षा का प्रबंध कर दिया गया है । (क़ुरआन 5:3, 10:9)

जब उनकी मृत्यु हुई है, इस्लाम धर्म पूरा हो चुका था और इस्लाम पर ईमान लाने वालों की जमाअत सुदृढ़ हो चुकी थी । क़ुरआन का संग्रह उनके जीवनकाल में ही संपूर्ण हो चुका था और संपूर्ण क़ुरआन अपने मूल रूप में ही सुरक्षित कर लिया गया था, तात्पर्य यह कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा ईश्वरीय धर्म, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में संपूर्ण हो चुका था तथा ईश्वरीय राज्य धरती पर स्थापित किया जा चुका था ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मिशन, उनके आदर्श तथा उनकी उपलब्धियों ने सिद्ध कर दिया है कि ईश्वरीय राज्य की स्थापना कल्पना मात्र नहीं है जो केवल परलोक से संबंधित हो, बल्कि इसका इस संसार से भी पूरा-पूरा संबंध है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के हाथों इस्लामी राज्य स्थापित हुआ और उन्नति के शिखर पर पहुंचा और जब कभी भी इसके सच्चे तथा निष्ठावान अनुयायी मौजूद होंगे, इस्लामी राज्य स्थापित किया जा सकता है । अत: यदि कोई व्यक्ति नुबूवत के कमाल को पहुंचा हो तो वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सिवा कौन हो सकता था ? और यदि कोई पुस्तक वह्य के समापन के यथानुकूल हो तो वह क़ुरआन के सिवा कौन-सा ग्रंथ हो सकता है ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मिशन की सफलता तथा उनके जीवनकाल में ही संपूर्ण क़ुरआन का प्रामाणिक संग्रह, इस बात का प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर थे । अत: इस विषय में किसी भी प्रकार का संदेह न केवल असंगत है, बल्कि निराधार भी है ।

4. अल्लाह का यह एलान कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर हैं, क़ुरआन की प्रामाणिकता, आप की संपूर्ण तथा अद्वितीय सफलता और इस्लाम की सार्वभौमिकता तथा क़ुरआन की शिक्षाओं का समान रूप से हर युग, हर स्थिति और हर व्यक्ति के लिए उपयुक्त होने पर आधारित है । यही वह धर्म है जो रंग, नस्ल, युग, सम्पत्ति तथा प्रतिष्ठा की सारी हदबंदियों को मलियामेट करता है । यही वह धर्म है जो संपूर्ण मानवजाति में समता तथा भ्रातृत्व, आज़ादी तथा मान-मर्यादा, शान्ति तथा सम्मान, मार्गदर्शन तथा मुक्ति का आश्वासन देता है । यह ईश्वरीय धर्म का मूल सारांश है तथा एक प्रकार की ईश्वरीय सहायता है जो ईश्वर इतिहास के आरंभ से ही मानव की हिदायत के लिए देता आया है । धर्म का विकास हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तथा क़ुरआन के अवतरण के बाद अपने चरम

बिंदु को पहुंच चुका है । परन्तु इस कथन का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि इतिहास का समापन हो चुका है या मानव को अब ईश्वरीय मार्गदर्शन की आवश्यकता बाक़ी नहीं रही। सच तो यह है कि केवल एक युग का आगमन है जिसमें मानव की आवश्यकतानुसार ईश्वरीय मार्गदर्शन की व्यावहारिक आदर्शों सहित पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था है । यह ईश्वरीय मार्गदर्शन मूलतः क़ुरआन में मौजूद है और उसका व्यावहारिक आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व में विद्यमान है ।

यदि मान भी लिया जाए कि किसी नये पैग़म्बर या किसी नयी ईशवाणी का अवतरण होना है तो प्रश्न उठता है कि ईशदूतत्व के गुण तथा क़ुरआन की सत्यता की जो मिसाल क़ायम हो चुकी है उसमें क्या वृद्धि होगी ? यदि इसका उद्देश्य ईशवाणी की सत्यता को सुरक्षित रखना हो, तो यह क़ुरआन द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है या यदि इसका उद्देश्य यह हो कि ईश्वरीय विधि को संसार में कार्यान्वित किया जा सके, अथवा ईश्वरीय राज्य की स्थापना की जा सके, तो इस बात पर इतिहास साक्षी है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पूर्णतया इस कार्य को कर दिखाया है और यदि इसका उद्देश्य इन्सान को ख़ुदा की मारफ़त से परिचित कराना और जीवन बिताने का सीधा रास्ता दिखाना है तो इसका भी व्यावहारिक आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तथा क़ुरआन पेश कर चुका है ।

मानव की आवश्यकता एक नये पैग़म्बर या नयी ईशवाणी का अवतरण नहीं है, बल्कि धर्म के प्रति बेहिसी से जगाना है तथा उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि वह जागे, मस्तिष्क-पट खोले और मन की धड़कनें तेज़ करे । उसकी आवश्यकता इसी से पूरी हो सकती है कि जो ग्रंथ उपलब्ध हैं उन्हीं पर मनन-चिन्तन करे, मौजूद साधनों का उपयोग करे और इस्लाम के असमाप्य भंडारों से लाभ उठाए, जिसने पिछले तमाम ग्रंथों की शुद्ध शिक्षाओं को अपने में संग्रहित कर लिया है ।

5. अल्लाह ने एलान किया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अंतिम ईशदूत होंगे और इस लिए वह हुए । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व किसी भी ईशदूत ने इतने कारनामे अंजाम नहीं दिये जितना कि आप (सल्ल०) ने, उनके पश्चात जिस किसी ने भी ईशदूतत्व का दावा किया, उसने आप (सल्ल०) की तुलना में कोई महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय कार्य नहीं किया । फिर भी यह ईश्वरीय एलान उन महान ऐतिहासिक घटनाओं की पेशगोई था, जो बाद में घटित हुईं । यह मानव के लिए एक शुभ सूचना थी कि वह अब बौद्धिक प्रौढ़ता तथा आध्यात्मिक बुलंदियों की मंज़िल में दाख़िल हो गया है कि अब नये ईशदूत तथा नयी ईशवाणी के बिना ही अपने आप पर भरोसा करके तथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके पूर्वाधिकारी ईशदूतों और उन पर अवतरित ईशवाणियों के अमूल्य भंडारों से सहायता लेकर ही उसे काम करना है । यह इस हक़ीक़त की पूर्वघोषणा थी कि संसार की सभी संस्कृतियां, जातियां तथा क्षेत्र एक दूसरे के बहुत निकट हो जाएंगे, जहां मानवता केवल एक ही सार्वभौम धर्म अल्लाह में भली-भांति जुड़ जाएगी, जहां अल्लाह को उसका उचित स्थान प्राप्त होगा और इन्सान अपनी हैसियत पहचानेगा । यह इस बात की बहुत बड़ी गवाही है कि ज्ञान विकसित हो चुका है । मानसिक उपलब्धियां मानव को ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करा सकेंगी । यह एक सच्चाई है कि अगर इन्सान अपने विकसित ज्ञान और अपनी पूर्ण मानसिक शक्ति को क़ुरआन की आध्यात्मिक तथा नैतिक शिक्षाओं से जोड़ता तो वह ईश्वर की मारफ़त प्राप्त करने में तथा अपने आपको ईश्वरीय नियमों के प्रति समर्पित करने में कभी विफल नहीं हो सकता ।

. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त ईशदूतत्व का ऐतिहासिक युग मानव को यह सीख देता है कि वह अपनी प्रेरणा से साइंस को इसका अवसर प्रदान करे कि वह सुचारू रूप से कार्य करे और ईश्वर के विशाल साम्राज्य में अपनी खोज जारी रखे बुद्धि को गतिमान बनाए रखे । इस्लाम के स्वभाव में इतनी लचक और इतनी व्यावहारिकता है कि वह हर नयी स्थिति का मुक़ाबला कर सकता है । क़ुरआन का स्वभाव इतना सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है कि उससे पथ-प्रदर्शन प्राप्त करने में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के संदेश का स्वभाव भी कुछ ऐसा है कि उससे तमाम लोग और तमाम नस्लें लाभ उठा सकती हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) न जातीय लीडर थे, न राष्ट्रीय मुक्तिदाता, बल्कि वह एक ऐतिहासिक विभूति थे और हैं । साथ ही अल्लाह की मारफ़त का सर्वश्रेष्ठ आदर्श थे । उनके मार्गदर्शन में 'प्रत्येक' व्यक्ति बहुत कुछ सीख सकता है । नैतिक मूल्यों का पालन करने के बहुत से उदाहरण प्राप्त कर सकता है और सच तो यह है कि हर युग की हर नस्ल उनके आदर्शों में अपनी सोची हुई आशाओं को साकार कर सकता है ।

مولانا سیّد ابوالاعلیٰ مودودیؒ کی شہرہ آفاق تفسیر

تفہیم القرآن حصہ چہارم کا ہندی اڈیشن

तफ़हीमुल-क़ुरआन [4]

लुक़माऩ-अल-अहक़ाफ़

हिन्दी तर्जमा: मौलाना नसीम अहमद ग़ाज़ी फ़लाही

बन्दगानِ ख़ुदा को ख़ुदा और उस की किताब क़ुरआन हकीम से वाबस्ता करने वाली अस्री उस्लूब में हर आम व ख़ास तबक़े के दरमियान यकसाँ मक़बूल व पसन्दीदा उर्दू तफ़्सीर तफ़हीमुल क़ुरआन हिस्सा चहारुम का हिन्दी ज़बान में आम फ़हम और दिल नशीं तर्जमा। हिन्दी अडीशन में 'तर्जमा क़ुरआन मजीद मअ मुख़्तसर हवाशी' से लिये गये कुछ हाशियों का इज़ाफ़ा भी।

- साइज़ : $\frac{20\times30}{8}$ ● सफ़हात : 800 ● हदिया : 585.00 रुपे

- अव्वल: ● साइज़ : $\frac{20\times30}{8}$ ● सफ़हात : 744 ● हदिया : 375.00 रुपे
- दोम: ● साइज़ : $\frac{20\times30}{8}$ ● सफ़हात : 768 ● हदिया : 500.00 रुपे
- सोम: ● साइज़ : $\frac{20\times30}{8}$ ● सफ़हात : 896 ● हदिया : 580.00 रुपे



MMI PUBLISHERS | مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26981652, 26984347 Mob: 7290092401

E-mail: info@mmipublishers.net, mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : क़ुरआनी आयतों की रोशनी में

■ अबू नस्र फ़ारूक़

नबी (सल्ल०) के पवित्र जीवन पर प्रकाश डालने वाली पवित्र क़ुरआन में बहुत-सी आयतें हैं, जिनमें से कुछ यहां पेश की जा रही हैं–

शुभ-सूचना देने वाला और सावधान करने वाला : "हमने तुमको सत्य-ज्ञान के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा । अब जो लोग नरक से संबंध जोड़ चुके हैं, उनकी ओर से तुम उत्तरदायी नहीं हो ।" (क़ुरआन, 2:119) "कि तुम बंदगी न करो मगर सिर्फ़ अल्लाह की । मैं उसकी ओर से तुमको ख़बरदार करने वाला भी हूं और ख़ुशख़बरी देने वाला भी ।" (क़ुरआन, 11:2) "और ऐ नबी, हमने तुमको सारे ही इन्सानों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सावधान करने वाला बनाकर भेजा है, मगर ज़्यादा लोग जानते नहीं हैं ।" (क़ुरआन, 34:28)

"तुम तो बस एक सावधान करने वाले हो । हमने तुमको सत्य के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर । और कोई समुदाय (उम्मत) ऐसा नहीं हुआ है जिसमें कोई चेतावनी देने वाला न आया हो ।" (35:23-24) "(ऐ नबी) उनसे कहो, मैं तो बस सावधान करने वाला हूं । कोई वास्तविक पूज्य नहीं, मगर अल्लाह जो यकता है, सब पर बलशाली, आसमानों और ज़मीन का मालिक और उन सारी चीज़ों का मालिक जो उनके बीच है, बलशाली और माफ़ करने वाला ।"

(क़ुरआन, 38:65-66)

"ऐ नबी, हमने तुमको गवाही देने वाला, ख़ुशख़बरी देने वाला और सावधान कर देने वाला बनाकर भेजा है ताकि ऐ लोगो, तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसका (अर्थात रसूल का) साथ दो, उसका आदर और सम्मान करो और सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह (गुणगान) करते रहो ।" (48:8-9) "अत: दौड़ों अल्लाह की ओर, मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से साफ़-साफ़ सावधान करने वाला हूं । और न बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य, मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से साफ़-साफ़ सावधान करने वाला हूं ।" (क़ुरआन, 51:50-51)

"ऐ नबी, हमने तुम्हें भेजा है गवाह बनाकर, ख़ुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला बनाकर, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देने वाला बनाकर और प्रकाशमान दीप बनाकर । ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो (तुम पर) ईमान लाए हैं और उनके लिए अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है ।" (क़ुरआन, 33:45-47)

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की दुआ : "और ऐ हमारे रब, इन लोगों में ख़ुद इन्हीं की क़ौम से एक रसूल उठाना, जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए, इनको किताब और समझ की शिक्षा दे और इनके जीवन संवारे । तू बड़ा प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।" (क़ुरआन, 2:129)

मस्नबी ज़िम्मेदारी : "वास्तव में ईमान वालों पर अल्लाह ने यह बहुत बड़ा उपकार किया है कि उनके बीच ख़ुद उन्हीं में से एक ऐसा पैग़म्बर उठाया जो उसकी आयतें उन्हें सुनाता है, उनके जीवन संवारता है और उनको किताब और गहरी समझ की शिक्षा देता है, हालांकि इससे पहले यही लोग खुली गुमराहियों में पड़े हुए थे ।" (क़ुरआन, 3:164) "जिस तरह (तुम्हारा इस चीज़ से कल्याण हुआ कि) हमने तुम्हारे बीच ख़ुद तुममें से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हारे जीवन को संवारता है, तुम्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता है, और तुम्हें वे बातें सिखाता है जो तुम न जानते थे ।" (क़ुरआन, 2:151)

"वही है जिसने उम्मियों के अन्दर एक रसूल ख़ुद उन्हीं में से उठाया, जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है, उनकी ज़िन्दगी संवारता है, और उनको किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, हालांकि इससे पहले वे

खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे। और (इस रसूल का भेजा जाना) उन दूसरे लोगों के लिए भी है जो अभी उनसे नहीं मिले हैं। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"
(क़ुरआन, 62:2-3)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का अनुसरण : "ऐ नबी, लोगों से कह दो कि यदि तुम वास्तव में अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा। वह बड़ा क्षमाशील और दयावान है। उनसे कहो कि "अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो" फिर यदि वे तुम्हारी बात न मानें, तो निश्चय ही यह संभव नहीं है कि अल्लाह ऐसे लोगों से प्रेम करे, जो उसके और उसके रसूल के आज्ञापालन से इन्कार करते हों।" (क़ुरआन, 3:31-32) "अल्लाह और उसके रसूल का आदेश मानो, आशा है कि तुम पर दया की जाएगी।" (क़ुरआन, 3:132)

"जो अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें बहती होंगी और उन बाग़ों में वह हमेशा रहेगा और यही बड़ी सफलता है। और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसकी निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन कर जाएगा उसे अल्लाह आग में डालेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए अपमानजनक सज़ा है।" (4:13-14) "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी हों, फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा खड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो अगर तुम वास्तव में अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यही एक सही कार्य-प्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।" (क़ुरआन, 4:59)

"जिसने रसूल की आज्ञा मानी उसने वास्तव में अल्लाह का आज्ञापालन किया। और जो मुंह मोड़ गया, तो बहरहाल हमने तुम्हें उन लोगों पर चौकीदार बनाकर तो नहीं भेजा है।" (क़ुरआन, 4:80) "और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो अगर तुम ईमान वाले हो।" (क़ुरआन, 8:1) "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और आदेश सुनने के बाद उससे मुंह न फेरो।" (क़ुरआन, 8:20)

"ये लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया, मगर इसके बाद इनमें से एक गिरोह (आज्ञापालन से) मुंह मोड़ जाता है। ऐसे लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं।" (24:47) "जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे उसने बड़ी सफलता प्राप्त की।" (33:71) "जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह उसे उन जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जो मुंह फेरेगा उसे वह दर्दनाक अज़ाब देगा।" (क़ुरआन, 48:17)

नबी की मृत्यु : "मुहम्मद इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल हैं, उनसे पहले और भी रसूल गुज़र चुके हैं, फिर क्या अगर उनकी मृत्यु हो जाए या उनकी हत्या कर दी जाए तो तुम लोग उल्टे पांव फिर जाओगे ?" (क़ुरआन, 3:144) "और ऐ नबी, अमरता तो हमने तुमसे पहले भी किसी इन्सान के लिए नहीं रखी है, अगर तुम मर गये तो क्या ये लोग हमेशा जीते रहेंगे ? हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है।" (21:34-35) "(ऐ नबी) तुम्हें भी मरना है और इन लोगों को भी मरना है। आख़िरकार क़ियामत के दिन तुम सब अपने रब के सामने अपना-अपना मुक़दमा पेश करोगे।" (क़ुरआन, 39:30-31)

मृदुल स्वभाव : "(ऐ पैग़म्बर), यह अल्लाह की बड़ी दयालुता है कि तुम इन लोगों के लिए बहुत नर्म स्वभाव के हो। अन्यथा यदि कहीं तुम क्रूर स्वभाव और कठोर हृदय के होते तो ये सब तुम्हारे आस-पास से छंट जाते।" (क़ुरआन, 3:159)

फ़ैसले को स्वीकार करना : "ऐ नबी, तुम्हारे रब की क़सम ! ये कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के मतभेदों में ये तुमको फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फ़ैसला करो उस पर अपने दिलों में भी कोई तंगी न पाएं, बल्कि स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लें।" (क़ुरआन, 4:65)

"अल्लाह और उसके रसूल की बात मानो और बाज़ आ जाओ, लेकिन अगर तुमने अवहेलना की तो जान लो कि हमारे रसूल पर बस साफ़-साफ़ आदेश पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी थी।" (क़ुरआन, 5:92)

"किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को यह हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दे तो फिर उसे अपने उस मामले में ख़ुद फ़ैसला करने का अधिकार बाक़ी रहे। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे तो

वह स्पष्ट पथभ्रष्टता में पड़ गया ।'' (क़ुरआन, 33:36)

इनाम पाने वाले : ''जो लोग अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है अर्थात नबी, सच्चे लोग और शहीद और अच्छे लोग । कैसे अच्छे हैं ये साथी जो किसी को प्राप्त हों ।'' (क़ुरआन, 4:69)

ईमान लाओ : ऐ नबी (मुहम्मद) कहो, ''ऐ इन्सानो, मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का पैग़म्बर हूं जो ज़मीन और आसमानों की बादशाही का मालिक है, उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है, वही ज़िन्दगी प्रदान करता है और वही मौत देता है, अत: ईमान लाओ अल्लाह पर और भेजे हुए उम्मी नबी पर जो अल्लाह और उसके आदेशों को मानता है, और उसके अनुयायी बनो, उम्मीद है कि तुम सीधा मार्ग पा लोगे । (क़ुरआन, 7:158)

''लोगो, यह रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है, ईमान ले आओ, तुम्हारे लिए ही बेहतर है, और अगर इन्कार करते हो तो जान लो कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला भी है और गहरी समझ वाला भी ।'' (क़ुरआन, 4:170)

सन्देश पहुंचा दो : ''ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है वह लोगों तक पहुंचा दो । अगर तुमने ऐसा न किया तो उसकी पैग़म्बरी का हक़ अदा न किया । अल्लाह तुमको लोगों की बुराई से बचाने वाला है ।'' (क़ुरआन, 5:67)

लाभ-हानि : ऐ नबी, उनसे कहो कि ''मुझे अपने आपके लिए किसी लाभ और हानि का अधिकार प्राप्त नहीं, अल्लाह ही है जो कुछ चाहता है वह होता है । और अगर मुझे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान होता तो मैं बहुत-से लाभ अपने लिए प्राप्त कर लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुंचती । मैं तो सिर्फ़ एक सचेतकर्ता और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें ।'' (क़ुरआन, 7:188) ''कहो, ''मेरे अधिकार में तो ख़ुद अपना नफ़ा और नुक़सान भी नहीं, सब कुछ अल्लाह की इच्छा पर अवलंबित है । हर समुदाय के लिए मुहलत की एक अवधि है, जब यह अवधि पूरी हो जाती है तो घड़ी भर भी आगे और पीछे नहीं होता ।'' (क़ुरआन, 10:49)

आपस में झगड़ा न करो : ''और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो और आपस में झगड़ो नहीं, नहीं तो तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी । सब्र से काम लो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ।'' (क़ुरआन, 8:46)

मुक़ाबला करना : ''क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि जो अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करता है, उसके लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा ? यह बहुत बड़ी रुसवाई है ।'' (क़ुरआन, 9:63)

भलाई व सफलता की लालसा : ''देखो, तुम लोगों के पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुम ही में से है, तुम्हारा नुक़सान में पड़ना उसके लिए असह्य है, तुम्हारी कामयाबी की वह लालसा रखता है, ईमान लाने वालों के लिए वह बड़ा मेहरबान और रहमदिल है । अब अगर ये लोग तुमसे मुंह फेरते हैं तो ऐ नबी, इनसे कह दो कि ''मेरे लिए अल्लाह बस करता है, कोई पूज्य नहीं मगर वह, उसी पर मैंने भरोसा किया और वह मालिक है महान राजसिंहासन का ।'' (क़ुरआन, 9:128-129)

परोक्ष का ज्ञान : ''ऐ नबी, ये परोक्ष (ग़ैब) की ख़बरें हैं जिसकी प्रकाशना (वह्य) हम तुम्हारी ओर कर रहे हैं । इससे पहले न तुम इनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम । अत: सब्र से काम लो, अंतिम परिणाम परहेज़गारों के ही हक़ में है ।'' (क़ुरआन, 11:49)

सत्य की गवाही : ''(ऐ नबी, इन्हें उस दिन से सावधान कर दो) जबकि हम हर उम्मत में ख़ुद उसी के अन्दर से एक गवाह उठा खड़ा करेंगे जो उसके मुक़ाबले में गवाही देगा, और इन लोगों के मुक़ाबले में गवाही देने के लिए हम तुम्हें लाएंगे । और (इसी गवाही की तैयारी है कि) हमने यह किताब तुम पर अवतरित कर दी है जो हर चीज़ को साफ़-साफ़ स्पष्ट कर देने वाली है और मार्गदर्शन एवं दयालुता और शुभ सूचना है उन लोगों के लिए जो आज्ञाकारी हो गये हैं ।'' (क़ुरआन, 16:89) ''तुम लोगों के पास हमने उसी प्रकार एक रसूल तुम पर गवाह बनाकर भेजा है जिस प्रकार हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था ।'' (क़ुरआन, 73:15)

मेराज : ''पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बन्दे को प्रतिष्ठित मस्जिद (मस्जिदे हराम) से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को उसने बरकत दी है ताकि उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाए, वास्तव में वही है सब

कुछ सुननें और देखने वाला ।'' (क़ुरआन, 17:1)

सत्य और असत्य : ''और दुआ करो कि पालनहार मुझको जहां भी तू ले जा सच्चाई के साथ ले जा और जहां से भी निकाल सच्चाई के साथ निकाल और अपनी ओर से एक सत्ता एवं अधिकार को मेरा सहायक बना दे । और घोषणा कर दो कि ''सत्य आ गया और असत्य मिट गया, असत्य तो मिटने ही वाला है ।'' (क़ुरआन, 17:80-81)

प्रदान की हुई चीज़ वापस लेना : ''और ऐ नबी, हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने प्रकाशना (वह्य) के द्वारा तुमको प्रदान किया है, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न पाओगे जो उसे वापस दिला दे । यह तो जो कुछ तुम्हें मिला है तुम्हारे रब की दयालुता से मिला है, वास्तविकता यह है कि उसका अनुग्रह तुम पर बहुत बड़ा है ।'' (क़ुरआन, 17:86-87)

जान मत दो : ''अच्छा, तो ऐ नबी, शायद तुम इनके पीछे ग़म के मारे अपनी जान खो देने वाले हो अगर ये उस शिक्षा पर ईमान न लाए ।'' (क़ुरआन, 18:6) ''ऐ नबी, शायद तुम इस ग़म में अपनी जान खो दोगे कि ये लोग ईमान नहीं लाते ।'' (क़ुरआन, 26:3)

मैं भी एक इन्सान हूं : ''ऐ नबी, कहो कि मैं तो एक मनुष्य हूं तुम ही जैसा, मेरी ओर प्रकाशना (वह्य) की जाती है कि तुम्हारा ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है, अत: जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो उसे चाहिए कि नेक कर्म करे और बन्दगी में अपने रब के साथ किसी और को सम्मिलित न करे ।'' (क़ुरआन, 18:110) ''ऐ नबी, उनसे कहो, मैं तो एक इन्सान हूं तुम जैसा । मुझे प्रकाशना (वह्य) के द्वारा बताया जाता है कि तुम्हारा ईश तो बस एक ही ईश है, अत: तुम सीधे उसी का रुख़ अपनाओ और उससे माफ़ी चाहो ।'' (क़ुरआन, 41:6)

मानवता उपकारक (सल्ल॰) : ''ऐ नबी, हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है ।'' (क़ुरआन, 21:107)

रिश्तेदारों और नातेदारों को डराओ : ''अपने निकटतम नातेदारों को डराओ । और ईमान लाने वालों में से जो लोग तुम्हारे अनुयायी हों उनके साथ विनम्रता का व्यवहार करो, लेकिन अगर वे तुम्हारी अवज्ञा करें तो उनसे कह दो कि जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूं ।'' (क़ुरआन, 26:214-216)

मैं इसकी कोई पारिश्रमिक नहीं मांगता : ऐ नबी तुमको हमने बस एक ख़ुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है । इनसे कह दो कि मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला बस यही है कि जिसका जी चाहे वह अपने रब का मार्ग अपना ले ।'' (क़ुरआन, 25:56-57) ''(ऐ नबी) इनसे कह दो कि मैं इस संदेश पहुंचाने (तबलीग़) पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, और न मैं बनावटी लोगों में से हूं । यह तो एक नसीहत है सारे जहान वालों के लिए ।'' (क़ुरआन, 38:86-87)

पढ़ना-लिखना : ''(ऐ नबी) तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न अपने हाथ से लिखते थे, अगर ऐसा होता तो असत्यवादी लोग शक में पड़ सकते थे ।'' (क़ुरआन, 29:48)

नबी का व्यक्तित्व : ''निस्संदेह नबी को तो ईमान वालों के लिए उनके अपने ख़ुद की अपेक्षा प्राथमिकता प्राप्त है, और नबी की पत्नियां उनकी माएं हैं, मगर अल्लाह की किताब के अनुसार सामान्य ईमान वालों और 'हिजरत' करने वालों की अपेक्षा नातेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं, अलबत्ता अपने साथियों के साथ तुम कोई भलाई (करना चाहो तो) कर सकते हो । यह आदेश अल्लाह की किताब में लिखा हुआ है । और (ऐ नबी) याद रखो उस प्रतिज्ञा को जो हमने सब पैग़म्बरों से ली है, तुमसे भी और नूह और इबराहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा से भी । सबसे हम दृढ़ वचन ले चुके हैं ।'' (क़ुरआन, 33:6-7)

उत्तम आदर्श : ''वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को ज़्यादा याद करे ।'' (क़ुरआन, 33:21)

अंतिम ईशदूत : ''(लोगो) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, मगर वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (आख़िरी नबी) हैं, और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है ।'' (क़ुरआन 33:40)

महरम व नामहरम : ''ऐ नबी, हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दी तुम्हारी वे पत्नियां जिनके महर तुमने अदा किये हैं, और वे औरतें जो अल्लाह की प्रदान की हुई दासियों में से तुम्हारी मिलकियत में आएं, और तुम्हारी वे

चचाज़ाद और फूफीज़ाद और मामूज़ाद और ख़ालाज़ाद बहनें जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की है, और वह ईमान वाली औरत जिसने अपने आपको नबी के लिए हिबा किया हो और नबी उसे निकाह में लेना चाहे । यह छूट सिर्फ़ तुम्हारे लिए है, दूसरे ईमान वालों के लिए नहीं है । हमको मालूम है कि सामान्य ईमान वालों के लिए उनकी पत्नियों और दासियों के बारे में हमने क्या सीमाएं निर्धारित की हैं । (तुम्हें उन सीमाओं से हमने इसलिए मुक्त किया है) ताकि तुम्हारे लिए कोई तंगी न रहे, और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील और दयावान है । तुमको अधिकार दिया जाता है कि अपनी पत्नियों में से जिसे चाहो अपने से अलग रखो, जिसे चाहो अपने साथ रखो और जिसे चाहो अलग रखने के बाद अपने पास बुला लो । इस मामले में तुम पर कोई दोष नहीं है । इस तरह ज़्यादा उम्मीद है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी और वे शोकाकुल न होंगी, और जो कुछ भी तुम उनको दोगे उस पर वे सब राज़ी रहेंगी । अल्लाह जानता है जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है, और अल्लाह सर्वज्ञ और सहनशील है । इसके बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें हलाल नहीं हैं, और न इसकी इजाज़त है कि इनकी जगह और पत्नियां ले आओ चाहे उनकी सुन्दरता तुम्हें कितनी ही पसंद हो, अलबत्ता दासियों की तुम्हें अनुमति है । अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखता है ।'' (क़ुरआन, 33:50-52)

नोट: क़ुरआन की इन आयतों में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को एक समय में चार से ज़्यादा बीवियों के रखने की इजाज़त दी गयी है । आयत 50 की रौ से चचाज़ाद, फूफीज़ाद, मामूज़ाद और ख़ालाज़ाद बहनों से निकाह हलाल और जायज़ है ।

अल्लाह से बात करना : ''किसी इन्सान का यह मक़ाम नहीं है कि अल्लाह उससे आमने-सामने बात करे । उसकी बात या तो वह्य के तौर पर होती है, या परदे के पीछे से, या फिर वह कोई सन्देशवाहक (फ़रिश्ता) भेजता है और वह उसके आदेश से जो कुछ वह चाहता है प्रकाशना (व्यक्त) करता है, वह सर्वोच्च और तत्वदर्शी है । और इसी प्रकार से (ऐ नबी) हमने अपने आदेश से एक रूह (प्राण एवं सारतत्व) तुम्हारी ओर प्रकाशना की है । तुम्हें कुछ पता न था कि किताब क्या होती है और ईमान क्या होता है, मगर उस रूह को हमने एक प्रकाश बना दिया जिससे हम मार्ग दिखाते हैं अपने बन्दों में से जिसे हम चाहते हैं । यक़ीनन तुम सीधे मार्ग की ओर पथ-प्रदर्शन कर रहो हो ।''

(क़ुरआन, 42:51-52)

जिन्नों का क़ुरआन सुनना : ''(और वह घटना भी उल्लेखनीय है) जब हम जिन्नों के एक गिरोह को तुम्हारी ओर ले आये थे ताकि क़ुरआन सुनें । जब वे उस जगह पहुंचे (जहां तुम क़ुरआन पढ़ रहे थे) तो उन्होंने आपस में कहा, चुप हो जाओ । फिर जब वह पढ़ा जा चुका तो वे सावधान करने वाले बनकर अपनी क़ौम की ओर पलटे । उन्होंने जाकर कहा, ''ऐ हमारी क़ौम के लोगो, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गयी है, पुष्टि करने वाली है अपने से पहले आयी हुई किताबों की, पथ-प्रदर्शन करती है सत्य और सीधे मार्ग की ओर । ऐ हमारी क़ौम के लोगो, अल्लाह की ओर बुलाने वाले का आमंत्रण स्वीकार कर लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करेगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा देगा ।''

(क़ुरआन, 46:29-31)

गुनाह माफ़ : ''ऐ नबी, हमने तुमको खुली विजय प्रदान कर दी ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली-पिछली हर कोताही को माफ़ करे और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुम्हें सीधा मार्ग दिखाए और तुमको बड़ी सहायता प्रदान करे ।'' (क़ुरआन, 48:1-3)

सच्चा स्वप्न : ''वास्तव में अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा स्वप्न दिखाया था जो ठीक-ठीक सत्य के अनुसार था । अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) में पूरे अमन (शान्ति) के साथ प्रवेश करोगे अपने सिर मुडवाओगे और बाल कटवाओगे, और तुम्हें कोई डर न होगा । वह उस बात को जानता था जिसे तुम न जानते थे इसलिए वह स्वप्न पूरा होने से पहले उसने यह क़रीब की विजय तुम्हें प्रदान कर दी । वह अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा है ताकि उसको पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे और इस हक़ीक़त पर अल्लाह की गवाही काफ़ी है । मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ।'' (क़ुरआन, 48:27-29)

अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ना : ''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है । ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊंची न करो, और न नबी के

साथ ऊंची आवाज़ से बात करो जिस तरह तुम आपस में एक-दूसरे से करते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा किया-कराया सब नष्ट हो जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने बात करते हुए अपनी आवाज़ दबी रखते हैं वे वास्तव में वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जांच लिया है, उनके लिए माफ़ी है और बड़ा बदला है।'' (क़ुरआन, 49:1-3)

भविष्यवाणी : ''और याद करो मरयम के बेटे ईसा की वह बात जो उसने कही थी कि ''ऐ इसराईल के बेटो, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, पुष्टि करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले आयी हुई मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा।'' (क़ुरआन, 61:6)

हलाल और हराम : ''ऐ नबी, तुम क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जिसको अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है ? (क्या इसलिए कि) तुम अपनी बीवियों की प्रसन्नता चाहते हो ? अल्लाह माफ़ करने वाला और दया करने वाला है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए अपनी क़समों की पाबंदी से निकलने का तरीक़ा निश्चित कर दिया है। अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है, और वही सर्वज्ञ और तत्वदर्शी है। (और यह मामला भी ध्यान देने के योग्य है कि) नबी ने एक बात अपनी बीवी से रहस्य में कही थी। फिर जब उस बीवी ने (किसी और पर) वह रहस्य प्रकट कर दिया और अल्लाह ने नबी को इस (रहस्योदघाटन) की सूचना दे दी, तो नबी ने उस पर किसी हद तक (उस बीवी को) ख़बरदार किया और किसी हद तक उसे टाल दिया। फिर जब नबी ने उसे (रहस्योदघाटन) यह बात बतायी तो उसने पूछा आपको इसकी ख़बर किसने दी ? नबी ने कहा, ''मुझे उसने ख़बर दी जो सब कुछ जानता है और ख़ूब ख़बर रखने वाला है।'' (क़ुरआन, 66:1-3)

उठो और ख़बरदार करो : ''ऐ ओढ़-लपेटकर लेटने वाले, उठो और ख़बरदार करो। और अपने रब की बड़ाई का एलान करो। और अपने कपड़े स्वच्छ रखो। और गंदगी से दूर रहो। और एहसान न करो अधिक प्राप्त करने के लिए। और अपने रब के लिए सब्र करो।''

(क़ुरआन, 74:1-7)

अपने कर्म बरबाद न करो : ''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो और अपने कर्मों को बरबाद न कर लो।''

(क़ुरआन, 47:33)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सांत्वना : ''क़सम है प्रकाशमान दिन की और रात की जबकि वह शांतिपूर्वक छा जाए। (ऐ नबी) तुम्हारे रब ने तुमको हरगिज़ नहीं छोड़ा और न वह अप्रसन्न हुआ। और यक़ीनन तुम्हारे लिए बाद का ज़माना पहले के ज़माने से ज़्यादा अच्छा है। और जल्द ही तुम्हारा रब तुमको इतना देगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे। क्या उसने तुमको अनाथ नहीं पाया और फिर ठिकाना दिया ? और तुम्हें राह से अपरिचित पाया और राह दिखायी। और तुम्हें निर्धन पाया और फिर धनवान कर दिया। अत: अनाथ के साथ सख़्ती न करो, और मांगने वाले को न छिड़को, और अपने रब की नेमत का प्रदर्शन करो।''

(क़ुरआन, 93:1-11)

अल्लाह की मदद : ''(ऐ नबी) क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया ? और तुम पर से वह भारी बोझ उतार दिया जो तुम्हारी कमर तोड़े जा रहा था। और तुम्हारे लिए तुम्हारी ध्वनि ऊंची कर दी। अत: वास्तविकता यह है कि तंगी के साथ कुशादगी भी है। बेशक, तंगी के साथ कुशादगी भी है। अत: जब तुम निवृत्त हो तो इबादत की मेहनत में लग जाओ और अपने रब की ही ओर प्रवृत्त हो।'' (क़ुरआन 94:1-8)

ANSARI STONE KOTA

Deals in :
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE



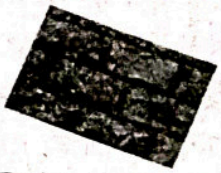

KOTA STONE

Address :
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

आजकल

■ डॉ॰ तारिक़ असलम 'तस्नीम'

सवेरे-सवेरे उस बिल्डिंग का नौकर कूड़ेदान में ढेर सारा जूठन फेंक गया । हमेशा की तरह वहां प्रतीक्षारत नंगे-अधनंगे बच्चे खिचड़ीनुमा जूठन पर टूट पड़े । वे सभी अधिक से अधिक भोजन पेट में उतार लेना चाहते थे । चन्द मिनटों बाद ही वहां कुछ भी शेष नहीं रह गया था । अब वे एक बार फिर ललचाई नज़रों से उसी बिल्डिंग की ओर देख रहे थे ।

अचानक उनकी दृष्टि एक चमचमाती कार पर पड़ी जो इधर ही आ रही थी, जिसकी पिछली सीट पर एक खूबसूरत-सा कुत्ता अपने अगले दोनों पैरों के बीच सलाईस ब्रेड का एक मोटा टुकड़ा दबाये हुए बैठा था । जिस पर चार वर्षीय दीनू की नज़र पड़ी तो वह रोने लगा, उसे अपनी तेज़ होती भूख का एहसास हुआ ।

उसे रोता देखकर कुत्ता न जाने क्यों सोचकर गुर्राया, ब्रेड का टुकड़ा खिड़की से बाहर गिर गया । वह ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा । कार रुक गयी । एक मोटे आदमी का सिर बाहर निकला, उसने दीनू से ही कहा–'देखता क्या है उसे उठाकर इधर ला.. लेकर भागा तो...गोली मार दूंगा ।'

गुंडे

शहर में एकाएक दंगे की आग भड़क उठी । एक संप्रदाय विशेष के लोगों का क़त्लेआम किया जाने लगा । उनके दूकान और मकान भी लूटे और जलाये गये । क्षेत्र की क्षण-प्रतिक्षण बिगड़ती स्थिति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से प्रशासन को निषेधाज्ञा लागू करनी पड़ी और दंगाइयों, गुंडों एवं बदमाशों को देखते ही गोली मारने का आदेश दिया गया । फिर भी न तो क़त्लेआम बन्द हुआ, न ही लूटपाट की घटनाओं में कोई कमी आयी । अमन-शांति की अपील भी जैसे फांसी के फंदे पर झूल गयी ।

पूरे इलाक़े को सेना के सुपुर्द कर दिया गया । चारों ओर सेना गश्त करने लगी । जिधर दंगाई दिखायी दिये, उन्हें गोली मार दी गयी । धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होने लगी । इस आश्चर्यजनक सफलता के बारे में आम लोगों ने जानकारी प्राप्त करनी चाही । एक सेना अधिकारी ने दबे स्वर में इतना भर बताया 'दंगाई कोई और नहीं पुलिस वाले थे । लूटपाट और आग लगाने का काम करने वाले एक पार्टी विशेष के कार्यकर्ता और चमचे थे ।'

जिसके नेता को निर्विरोध चुनाव जीतने की हार्दिक इच्छा थी, इसलिए यह दंगा कराया गया था ।

क़द

राधा की हालत आज कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गयी थी । काफ़ी दवा कराने के उपरांत भी उसकी बेहोशी नहीं टूट रही थी । राधा को इस हालत में देखकर उसका पति गोपी बुरी तरह घबरा उठा और वह रिक्शा लेकर तुरंत डॉक्टर के पास पहुंचा ।

डॉक्टर को लेकर जब गोपी अपने घर पहुंचा तब तक राधा अंतिम सांस ले चुकी थी । उसके बच्चे बिलख-बिलख कर रो रहे थे । मुहल्ले के लोग सहायता के लिए दौड़ पड़े ।

पत्नी की मौत सुनकर गोपी सन्न रह गया था । वह अपलक अपनी मृत पत्नी की ओर देखे जा रहा था । तभी डॉक्टर के शब्द उसके कानों से टकराएं–"गोपी ! जो होना था सो वह हो चुका है । मौत के आगे किसी का वश नहीं चला है । अब मुझे जल्दी अस्पताल पहुंचना है । आप मुझे मेरी फ़ीस के सौ रुपये दे दीजिए ।"

गोपी ने अपनी जेब से सौ रुपये का नोट निकाल कर डॉक्टर को पकड़ा दिया और जब वह दस रुपये का नोट रिक्शा चालक को देने लगा तो उसने लेने से इन्कार कर दिया । उसने गोपी के कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना भरे स्वर में कहा–"नहीं भाई ! मुझे इनकी ज़रूरत नहीं है । इन्हें अपने पास रखो । अब इनकी मेरे से ज़्यादा तुम्हें ज़रूरत पड़ेगी । अपने बच्चों को संभालों और पत्नी का अंतिम संस्कार करो ।" इसके आगे वह कुछ नहीं बोल पाया, क्योंकि उसका गला भर आया था । फिर वह डॉक्टर को रिक्शे में बैठाकर अस्पताल की तरफ़ चल पड़ा था । रिक्शा में बैठा डॉक्टर जब आत्म-मंथन करने लगा तो उसे रिक्शा चालक का क़द अपने से कहीं ज़्यादा ऊंचा लगने लगा था ।

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY



گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

دافع

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گٹھیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

شوگر کی کامیاب دوا

ذیابطیش سی



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ धन-सामग्री हमने तुमको प्रदान की है, उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश चलेगी । और ज़ालिम वास्तव में वही हैं, जो कुफ़्र की नीति अपनाते हैं ।''

(क़ुरआन, 2:254)

A Well Wisher

GOA

इस्लाम का सन्देश

अप्रैल 1976 के आरंभ में इस्लामिक कौंसिल ऑफ़ यूरोप के तत्वाधान में लंदन में एक अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें समूचे विश्व के विद्वान, उलमा तथा चिंतकों ने इस्लाम के विभिन्न विषयों पर लेख प्रस्तुत किये। मुझे भी इस सम्मेलन में शरीक होने का निमंत्रण मिला, पर मैं बीमारी के कारण न जा सका, हां, लेख लिखकर वहां भेज दिया था। यह लेख 4 अप्रैल को सम्मेलन में पढ़कर सुनाया गया।

■ मौलाना अबुल आला मौदूदी

आरंभ ही में यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि हमारे विश्वास के अनुसार इस्लाम किसी ऐसे धर्म का नाम नहीं, जिसे पहली बार मुहम्मद (सल्ल०) ने पेश किया हो और इस कारण आपको इस्लाम का संस्थापक कहना उचित हो। क़ुरआन इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करता है कि अल्लाह की ओर से मानवजाति के लिए सदैव एक ही धर्म भेजा गया है और वह है इस्लाम अर्थात अल्लाह के आगे नतमस्तक हो जाना। संसार के विभिन्न भागों तथा विभिन्न जातियों में जो नबी भी अल्लाह के भेजे हुए आये थे, वे अपने किसी अलग धर्म के संस्थापक नहीं थे कि उनमें से किसी के धर्म को नूहवाद और किसी के धर्म को इब्राहीमवाद या मूसावाद या ईसावाद कहा जा सके, बल्कि हर आने वाला नबी उसी एक धर्म को प्रस्तुत करता रहा, जो उससे पहले के नबी प्रस्तुत करते चले आ रहे थे।

नबियों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की विशेषता वास्तव में यह है कि–

(क) वह ख़ुदा के आख़िरी नबी हैं।

(ख) उनके माध्यम से अल्लाह ने उसी मूल धर्म को फिर ताज़ा कर दिया, जो तमाम नबियों का लाया हुआ था।

(ग) उसमें विभिन्न भाषाओं के लोगों ने घट-बढ़ करके जो अलग-अलग धर्म बना लिए थे, उन सबको अल्लाह ने छांटकर अलग कर दिया और मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिए से वास्तविक तथा विशुद्ध इस्लाम की शिक्षा मानवजाति को दी।

(घ) उनके बाद चूंकि अल्लाह को कोई नबी भेजना नहीं था, इसलिए उनको जो ग्रंथ उसने दिया, उसे उसकी मूल भाषा में शब्दशः सुरक्षित कर दिया, ताकि मनुष्य हर युग में उससे संमार्ग पा सके। क़ुरआन मजीद के बारे में यह बात हर संदेह से मुक्त रहे कि यह बिना किसी फेर-बदल के ठीक वही क़ुरआन मजीद है जो मुहम्मद (सल्ल०) ने पेश किया था। उसके अवतरण के समय में ही प्यारे नबी (सल्ल०) उसको लिखवाते रहे थे और यह क्रम आपके देहांत तक चलता रहा। इस पूर्ण क़ुरआन मजीद को आपके प्रथम ख़लीफ़ा ने एक ग्रंथ के रूप में नक़ल करा के सुरक्षित कर लिया और और फिर तृतीय ख़लीफ़ा ने उसकी नक़लें इस्लामी जगत के समस्त केन्द्रों में भेज दीं। उस समय से लेकर आज तक हर देश और हर शताब्दी के लिखित तथा प्रकाशित क़ुरआन एकत्र करके देख लिया जाए, उनमें कोई अन्तर नहीं आएगा। इसके अतिरिक्त नमाज़ में क़ुरआन मजीद पढ़ने का आदेश प्यारे रसूल की रिसालत के पहले ही दिन से दे दिया गया था।

इसलिए सैकड़ों सहाबा किराम ने पूरा क़ुरआन मजीद और समस्त सहाबा किराम (रज़ि०) ने इसका कोई न कोई भाग प्यारे नबी (सल्ल०) के जीवनकाल ही में याद कर लिया था। उस समय से लेकर आज तक क़ुरआन मजीद को शब्दशः याद करने और हर वर्ष रमज़ान की नमाज़ तरावीह में पूरा क़ुरआन मजीद ज़ुबानी सुनाने का सिलसिला

समस्त मानवजाति के लिए

पूरे इस्लामी जगत में इस प्रकार प्रचलित चला आ रहा है और हर समय में लाखों हाफ़िज़ (कुरआन को कंठस्थ करने वाले) मौजूद रहे हैं । संसार की कोई धार्मिक पुस्तक भी इस प्रकार न लिखित रूप में मौजूद और न हाफ़िज़ों में महफ़ूज़ हुई है कि उसके सही होने में संदेह की लेशमात्र भी संभावना हो ।

(ड़) स्वयं उनका जीवन और उनकी सुन्नत को सहाबा (रज़ि॰) और बाद के हदीस के विशेषज्ञों ने ऐसे अनुपम ढंग से सुरक्षित कर लिया, जिससे अधिक श्रेष्ठतम ढंग से कभी किसी नबी या किसी और ऐतिहासिक व्यक्ति के जीवन-वृत्तांत और उसके कथन व व्यवहार सुरक्षित नहीं किये गये । संक्षेप में, वह ढंग यह था कि जो व्यक्ति भी मुहम्मद (सल्ल॰) से संबंधित करके कोई बात बताता था, उसे अनिवार्य रूप से यह बताना पड़ता था कि उस तक किन उल्लेखकर्ताओं के माध्यम से वह बात पहुंची है और उल्लेख करने का यह क्रम किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुंचता है या नहीं, जिसने स्वयं अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से वह बात सुनी हो या आप वह काम करते देखा हो । फिर जिन-जिन उल्लेखकर्ताओं के माध्यम से ये कथन बाद के लोगों तक पहुंचे, उनके जीवन-वृत्तांत की जांच-पड़ताल की गयी, ताकि यह जाना जा सके कि उनके उल्लिखित कथन विश्वसनीय हैं या नहीं ?

इस प्रकार हदीसों के संग्रह तैयार किये गये, जिनके संग्रहकर्ताओं ने हर हदीस के उल्लेखर्ताओं का पूरा क्रम लिपिबद्ध कर दिया और इसके साथ उल्लेखकर्ताओं की जीवनियों पर भी पुस्तकें लिख दी गयीं, जिनकी सहायता से आज भी हम यह खोज सकते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का जीवन कैसा था और उन्होंने अपने कथन व आचरण से लोगों को क्या शिक्षा दी थी ।

(च) इस प्रकार कुरआन मजीद और उसके लाने वाले नबी की प्रामाणिक जीवनी और सुन्नत, दोनों आपस में मिलकर सदा के लिए यह मालूम करने का विश्वसनीय माध्यम बन गये हैं कि अल्लाह का धर्म वास्तव में क्या है, वह हमारा क्या पथ-प्रदर्शन करता है और हम उससे क्या चाहते हैं ?

यद्यपि हम मुहम्मद (सल्ल॰) से पहले के तमाम नबियों पर ईमान रखते हैं–उन पर भी, जिनका उल्लेख कुरआन में आया है, और उन पर भी, जिनका कुरआन मजीद में नहीं आया, और यह ईमान हमारी आस्था का ऐसा अनिवार्य अंग है, जिसके बिना हम मुसलमान नहीं हो सकते, लेकिन हिदायत हासिल करने के लिए हम केवल मुहम्मद (सल्ल॰) ही की तरफ़ रुजू करते हैं । यह किसी पक्षपात के आधार पर नहीं है, वास्तव में इसका कारण यह है कि–

(क) वह आख़िरी नबी हैं, इसलिए उनकी लाई हुई शिक्षा अल्लाह की ओर से अंतिम हिदायत है ।

(ख) उनके माध्यम से जो अल्लाह का कलाम हमको पहुंचा है, वह विशुद्ध अल्लाह का कलाम है, जिसके साथ किसी कलाम की मिलावट नहीं हुई है, वह अपनी मूल भाषा में सुरक्षित है, उसकी भाषा एक जीवंत भाषा है, जिसे आज भी करोड़ों मनुष्य बोलते, लिखते और समझते हैं और उस भाषा का व्याकरण, शब्दकोष, मुहावरे, उच्चारण और आलेख में कुरआन-अवतरण के समय से अब तक कोई परिवर्तन नहीं आया है, और–

(ग) जैसा कि अभी मैं बयान कर चुका हूं, उनका जीवन-वृत्तांत, आचरण, कथन तथा कर्म के बारे में ऐतिहासिक रिकार्ड अधिक से अधिक संभव हद तक शुद्ध और अधिक से अधिक संभाव्य विस्तृत विवेचनाओं के साथ सुरक्षित है । यह बात चूंकि दूसरे नबियों पर चरितार्थ नहीं होती, इसलिए हम उन पर केवल ईमान रख सकते हैं, व्यावहारिक रूप से उनका पालन नहीं कर सकते ।

हमारी आस्थाओं के अनुसार अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की रिसालत तमाम दुनिया के लिए और हर काल के लिए है, इसलिए कि–

(क) कुरआन मजीद उनकी व्याख्या करता है ।

(ख) यह उनके अंतिम नबी होने की तार्किक मांग है, क्योंकि संसार में एक नबी के अंतिम नबी होने से स्वतः यह

बात अनिवार्य हो जाती है कि वह तमाम इन्सानों के लिए, और अपने बाद आने वाले हर काल के लिए नेता, तथा मार्गदर्शक हो ।

(ग) उनके माध्यम से वह हिदायत पूर्ण रूप से दे दी गयी है, जो सन्मार्ग पर चलने के लिए मनुष्य को चाहिए और यह भी उनके अंतिम नबी होने का तार्किक परिणाम है, क्योंकि संपूर्ण संमार्ग के बिना, जो नबी भेजा गया हो, वह अंतिम नबी नहीं हो सकता, बल्कि उसके बाद फिर एक नबी की ज़रूरत बाक़ी रह जाती है ।

(घ) और यह एक वास्तविकता है कि उनके बाद पिछले चौदह सौ वर्ष में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जन्मा है जो अल्लाह की ओर से नबी होने का दावा करने के साथ अपने चरित्र तथा आचरण और अपने काम तथा कलाम में नबियों से किसी छोटे दर्जे में भी समानता रखता हो, जिसने वह्य-वाहक होने का दावा करके कोई ऐसा ग्रंथ प्रस्तुत किया हो जो ईशवाणी से नाममात्र को भी समानता रखती हो और जिसे शरीअत देने वाला नबी कहा जाता हो ।

वार्ता के इस चरण में यह जान लेना भी अनिवार्य है कि ईश्वर की ओर से मनुष्य को किसी विशेष ज्ञान की आवश्यकता है, जो केवल नबियों के माध्यम से ही दिया गया है ?

संसार में एक प्रकार की चीज़ें वे हैं, जिन्हें हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अनुभव कर सकते हैं या अपने वैज्ञानिक अस्त्रों से काम लेकर इनका प्रयोग कर सकते हैं और इन साधनों से प्राप्त होने वाली जानकारियों को प्रयोगों, अनुभवों तथा चिन्तन-मनन की सहायता से क्रमागत बनाकर नये-नये परिणामों तक पहुंच सकते हैं । इस प्रकार की वस्तुओं के ज्ञान को ईश्वर की ओर से आने की कोई आवश्यकता नहीं है । यह हमारी अपनी खोज, यत्न, चिन्तन-मनन तथा शोध एवं गवेषणा का क्षेत्र है । यद्यपि इस मामले में भी हमारे स्रष्टा ने हमारा साथ बिल्कुल नहीं छोड़ दिया है । इतिहास के कालों में वह अनजाने ढंग से क्रम तथा विकास के साथ अपने पैदा किये हुए जगत से हमारा परिचय कराता रहा है । ज्ञान-विज्ञान के द्वार हम पर खोलता रहा है और समय-समय पर इलहामी (सांकेतिक) ढंग से किसी न किसी व्यक्ति को ऐसी कोई बात सुझाता रहा है, जिससे वह कोई नया आविष्कार या नया प्राकृतिक नियम मालूम कर लेने में समर्थ हो सकता है, पर कुल मिलाकर है यह मानव-ज्ञान का ही क्षेत्र, जिसके लिए अल्लाह की ओर से किसी नबी और ग्रंथ के अवतरित होने की आवश्यकता नहीं है ।

इस क्षेत्र में जो जानकारियां चाहिएं, उन्हें प्राप्त करने के साधन मनुष्य को दे दिये गये हैं ।

दूसरे प्रकार की चीज़ें वे हैं जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों और हमारे वैज्ञानिक अस्त्रों की पहुंच से परे हैं, जिन्हें न तो हम तोल सकते हैं, न नाप सकते हैं, न अपने वैज्ञानिक साधनों में से किसी साधन को इस्तेमाल करके उनकी वह जानकारी दे सकते हैं, जिसे 'ज्ञान' कहा जा सकता है । दार्शनिक और वैज्ञानिक उनके बारे में यदि कोई राय बना सकते हैं तो वह मात्र अटकल और अनुमान है, जिनके तर्क-सिद्धांतों को स्वयं वे लोग भी निश्चित धारणा का रूप नहीं दे सकते, जिन्होंने उन धारणाओं को प्रस्तुत किया है । और यदि वे अपनी ज्ञान-सीमाओं को जानते हों तो न उन पर स्वयं विश्वास कर सकते हैं, न किसी को विश्वास करने के लिए कह सकते हैं ।

यही वह क्षेत्र है जिसमें मनुष्य सत्य जानने के लिए सृष्टि के सृष्टा के दिये हुए ज्ञान का मुहताज है और स्रष्टा ने यह ज्ञान कभी इस तरह नहीं प्रदान किया है कि कोई पुस्तक छाप कर एक व्यक्ति के हाथ में दे दी हो और उससे कहा हो कि इसे पढ़कर स्वयं मालूम कर ले कि सृष्टि की और स्वयं तेरी वास्तविकता क्या है और इस वास्तविकता की दृष्टि से संसार के जीवन में तेरी कार्य-विधि क्या होनी चाहिए । इस ज्ञान को मनुष्यों तक पहुंचाने के लिए उसने सदैव नबियों को माध्यम बनाया है, वह्य (ईशवाणी) के द्वारा उनको सच्चाइयां बतायी हैं और उन्हें इस कार्य पर नियुक्त किया है कि यह ज्ञान लोगों तक पहुंचा दें ।

नबी का काम केवल इतना ही नहीं है कि वह बस वास्तविकता का ज्ञान लोगों तक पहुंचा दे, बल्कि उसका काम यह बताना भी है कि इस ज्ञान के अनुसार अल्लाह और मनुष्य, और, मनुष्य और मनुष्य के मध्य क्या वास्तविक संबंध हैं और क्या संबंध व्यावहारिक रूप से होना चाहिए ? यह ज्ञान किन विश्वासों की, किन इबादतों की, किन आचरणों की और संस्कृति व सभ्यता के किन नियमों की,

अपेक्षा करता है और इस ज्ञान के अनुसार सामाजिकता, अर्थ, राजनीति, न्याय, युद्ध-संधि, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, तात्पर्य यह कि जीवन के हर विभाग का गठन किन सिद्धांतों पर होना चाहिए । नबी केवल इबादतों तथा संस्कारों की एक व्यवस्था लेकर नहीं आता, जिसे संसार की परिभाषा में 'धर्म' कहा जाता है, बल्कि वह जीवन की एक पूर्ण व्यवस्था लेकर आता है, जिसका नाम इस्लाम की परिभाषा में 'दीन' (जीवन-व्यवस्था) है ।

फिर यह भी नहीं है कि नबी का मिशन मात्र 'दीन' का ज्ञान पहुंचाने तक ही सीमित हो, बल्कि उसका मिशन यह भी है कि जो लोग उसके पेश किये हुए दीन को स्वीकार करके 'मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन जाएं' उन्हें वह दीन समझाए । उसके विश्वास, आचरण, इबादतें, क़ानूनी हुक्म और समग्र जीवन-व्यवस्था से उनको परिचित कराये, उनके सामने स्वयं एक आदर्श मुस्लिम बनकर दिखाए ताकि वे अपने जीवन में उसका पालन कर सकें, उन्हें व्यक्तिगत तथा समूहगत प्रशिक्षण देकर एक विशुद्ध इस्लामी संस्कृति व सभ्यता के लिए व्यवहारत: तैयार करे और उनको संगठित कर ऐसा गिरोह बना दे, जो संसार में अल्लाह के 'दीन' को व्यावहारिक रूप देने का यत्न करे, यहां तक कि अल्लाह का बोल सर्वोपरि हो जाए और दूसरे बोल नीचे पड़ जाएं । आवश्यक नहीं है कि सब नबी अपने इस मिशन को सफलता के अंतिम चरण तक पहुंचाने में सफल हो ही गये हों, बहुत से नबी ऐसे हैं, जो अपनी किसी कोताही के कारण नहीं बल्कि तंग नज़र लोगों के पैदा किये हुए अवरोधों तथा स्थिति की प्रतिकूलताओं के कारण इसमें सफल नहीं हो सके, लेकिन बहरहाल तमाम नबियों का मिशन यही था, हां, मुहम्मद (सल्ल०) की यह ऐतिहासिक विशेषता रही है कि उन्होंने अल्लाह की बादशाही पृथ्वी में उसी प्रकार क़ायम करके दिखा दी, जैसी वह आकाश में है ।

क़ुरआन मजीद और मुहम्मद (सल्ल०) ने आरंभ ही से अपना संबोधन या तो तमाम इन्सानों के लिए समान रखा है या फिर इन्सानों में से जो भी इस्लाम का आवाहन स्वीकार कर लें, उनको 'ईमान वाला' होने के रूप में संबोधित किया है ।

क़ुरआन मजीद को शुरू से लेकर आख़िर तक देख जाइए और मुहम्मद (सल्ल०) के भाषणों तथा वार्ताओं के पूरे रिकार्ड की भी छानबीन कर जाइए, आप कहीं यह न देखेंगे कि इस ग्रंथ ने और इसके लाने वाले रसूल ने किसी विशेष देश, जाति, नस्ल या रंग या वर्ग के लोगों को या किसी विशेष भाषा के बोलने वालों को पुकारा हो । हर जगह या तो 'या आदम की औलाद !' या 'ऐ लोगो !' या 'ऐ इन्सानो !' कहकर संपूर्ण मानवजाति को इस्लाम अपनाने का आह्वान किया गया है या फिर इस्लाम अपनाने वालों को आदेश देने के लिए 'ऐ ईमान वालो' कहकर संबोधित किया गया है । इससे स्वत: यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम का संदेश विश्वव्यापी है और जो लोग भी इसे अपना लें, वे, बिल्कुल बराबर के अधिकारों के साथ 'मोमिन' (ईमान वाले) हैं । क़ुरआन कहता है, 'ईमान वाले तो एक दूसरे के भाई हैं' । अल्लाह के रसूल फ़रमाते हैं कि जो लोग भी इस्लामी मान्यताओं को स्वीकार कर लें और मुसलमानों की-सी कार्य-विधि अपना लें, उनके अधिकार वही हैं, जो हमारे हैं और उनके कर्तव्य भी वही हैं जो हमारे हैं ।

इससे भी अधिक स्पष्ट शब्दों में अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया, सुनो, तुम्हारा पालनहार भी एक ही है और तुम्हारा बाप (आदम) भी एक । किसी अरबी को किसी ग़ैर-अरबी पर कोई प्रमुखता नहीं, और न ग़ैर-अरबी को किसी अरबी पर कोई प्रमुखता नहीं, न कोई काला किसी गोरे पर प्रमुखता रखता है और न कोई गोरा किसी काले पर । प्रमुखता है तो ईशभय के आधार पर । तुममें से सर्वाधिक प्रमुखता वाला व्यक्ति वह है जो सबसे बढ़कर परहेज़गार है ।

इस्लाम की आधारशिला जिन विश्वासों पर है, उनमें सबसे प्रमुख और सर्वाधिक महत्वपूर्ण एक अल्लाह पर ईमान है, केवल इस बात पर नहीं कि अल्लाह मौजूद है और केवल इस बात पर भी नहीं कि वह एक है, बल्कि इस बात पर कि वही अकेले इस सृष्टि का स्रष्टा, स्वामी, शासक और प्रशासक है । उसी के क़ायम रखने से यह सृष्टि क़ायम है, उसी के चलाने से यह चल रही है और उसकी हर चीज़ को अपने क़ायम व बाक़ी रखने के लिए जिस आजीविका या ऊर्जा की आवश्यकता है, उसका जुटाने वाला वही है । संप्रभुत्व के समस्त गुण केवल उसी में पाये जाते हैं और कोई लेशमात्र भी उसके साथ शरीक नहीं है ।

प्रभुत्व के समस्त गुणों का भी मात्र वही पोषक है और इनमें से कोई गुण उसकी जाति के सिवा किसी को प्राप्त नहीं । पूरी सृष्टि को और उसकी एक-एक चीज़ को वह समान दृष्टि से देख रहा है, सृष्टि और उसकी हर वस्तु को वह सीधे से जानता है–

न केवल उसके वर्तमान को, बल्कि उसके अतीत और भविष्य को भी–यह सब कुछ देखने वाली दृष्टि और व्यापक ग़ैबी ज्ञान उसके अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं । वह सदैव से है और सदैव रहेगा, उसके अतिरिक्त सब नाशवान हैं और वह अपने अस्तित्व से स्वत: जीवित और बाक़ी है, वह न किसी की संतान है और न कोई उसकी संतान, उसकी ज़ात के अतिरिक्त संसार में जो भी है, वह उसकी रचना है और संसार में किसी की भी हैसियत नहीं है कि उसको किसी अर्थ में भी सृष्टि के स्वामी का समवर्ती या उसका बेटा या बेटी कहा जा सके ।

वही मनुष्य का वास्तविक उपास्य है । किसी को इबादत में उसके साथ शरीक करना सबसे बड़ा पाप और सबसे बड़ी बेवफ़ाई है । वही इन्सान की दुआएं सुनने वाला है और उन्हें क़बूल करने या न करने के अधिकार वही रखता है, उससे दुआ न मांगना अनुचित अभिमान है, उसके अतिरिक्त किसी और से दुआ मांगना अज्ञानता है और इसके साथ दूसरों से भी दुआ मांगना ख़ुदाई में ग़ैर-ख़ुदा को ख़ुदा के साथ शरीक ठहराना है ।

इस्लाम के अनुसार अल्लाह का संप्रभुत्व पारलौकिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक तथा विधिगत भी है और इस संप्रभुत्व में भी कोई उसका शरीक नहीं । उसकी पृथ्वी पर और उसके पैदा किये हुए जीवों पर, उसके अतिरिक्त किसी को हुक्म चलाने का अधिकार नहीं है, भले ही वह कोई बादशाह हो या शाही परिवार हो, या शासक वर्ग हो या कोई ऐसा लोकतंत्र हो जो जन-संप्रभुत्व को मानती हो, उसके मुक़ाबले में जो स्वच्छंद बनता है, वह भी द्रोही है और जो उसको छोड़कर किसी दूसरे का आज्ञापालन करता है, वह भी द्रोही । और ऐसा ही द्रोही वह व्यक्ति या संस्था है जो राजनीतिक तथा विधिगत संप्रभुत्व को अपने लिए मुख्य करके अल्लाह के अधिकार क्षेत्र को व्यक्तिगत क़ानून या धार्मिक आदेश व निर्देश तक सीमित करता है । वास्तव में अपनी पृथ्वी पर पैदा किए हुए मनुष्यों के लिए शरीअत देने वाला उसके सिवा न कोई है, न हो सकता है और न किसी को यह हक़ पहुंचता है कि इस श्रेष्ठतम संप्रभुत्व को चुनौती दे ।

इस्लाम की इस ईशधारणा के अनुसार कुछ बातें सहजत: अनिवार्य होती हैं–

(क) अल्लाह ही अकेला इन्सान का वास्तविक उपास्य (अथवा दूसरे शब्दों में उपासना का अधिकारी) है, जिसके सिवा किसी और की यह हैसियत ही नहीं है कि इन्सान उसकी इबादत करे ।

(ख) वही अकेला सृष्टि की तमाम शक्तियों का स्वामी है और इन्सान की दुआओं का पूरा करना या न करना बिल्कुल उसके अधिकार में है, इसलिए इन्सान को केवल उसी से दुआ मांगनी चाहिए और किसी के बारे में यह तक न सोचना चाहिए कि उससे भी दुआ मांगी जा सकती है ।

(ग) वही अकेला मनुष्य के भाग्य का स्वामी है और किसी दूसरे में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह मानव-भाग्य बना सके या बिगाड़ सके । इसलिए मनुष्य की आशा और उसकी आशंका, दोनों अनिवार्यत: उसी को लौटती हैं । उसके अतिरिक्त न किसी से आशाएं की जानी चाहिए, न किसी से डरना चाहिए ।

(ध) वही अकेला, इन्सान और उसके आसपास के जगत का स्रष्टा तथा स्वामी है, इसलिए इन्सान की हक़ीक़त तथा संपूर्ण जगत की वास्तविकताओं का सीधा तथा पूर्ण ज्ञान केवल उसी को है और हो सकता है । बस वही जीवन के विकट रास्तों में इन्सान को सही हिदायत और सही जीवन-विधि दे सकता है ।

(ड़) फिर चूंकि इन्सान का रचयिता तथा स्वामी वह है और वही इस पृथ्वी का स्वामी है, जिसमें इन्सान रहता है, इसलिए इन्सानों पर किसी दूसरे का संप्रभुत्व या स्वयं संप्रभुत्व पूर्णत: कुफ़्र है और इसी प्रकार इन्सान का स्वयं अपना विधाता बनना, या किसी और व्यक्ति या व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के विधान बनाने के अधिकार को मानना भी इसी श्रेणी में आता है । अपनी धरती पर अपनी सृष्टि का शासक तथा विधाता अनिवार्यत: केवल वही हो सकता है, और,

(च) संप्रभुत्व का वास्तविक स्वामी होने की हैसियत से उसका क़ानून वास्तव में सर्वोच्च क़ानून है और मनुष्य के लिए विधान बनाने का अधिकार केवल उसी सीमा तक है, जिस सीमा तक वह उस सर्वोच्च विधान के अधीन हो या उससे उद्धृत हो या उसकी दी हुई अनुमतियों पर आधारित हो ।

इस चरण पर हमारे सामने इस्लाम का दूसरा महत्वपूर्ण विश्वास आता है और वह है रिसालत का विश्वास । रसूल वह व्यक्ति है जिसको माध्यम बनाकर अल्लाह अपना क़ानून इन्सान को देता है और यह क़ानून हमको रसूल से दो शक्लों में मिलता है–

1. एक अल्लाह के कलाम के रूप में, जो शब्दशः रसूल पर अवतरित किया गया है अर्थात कुरआन मजीद ।

2. दूसरे वे कथन तथा आचरण और आदेश एवं निषेध, जो रसूल ने अपने अनुयायियों को ईश्वरीय पथ-प्रदर्शन के अनुसार दिये अर्थात सुन्नत ।

इस विश्वास का महत्व यह है कि यदि यह न हो तो अल्लाह पर ईमान मात्र एक सौद्धांतिक नियम बनकर रह जाता है, उदाहरणस्वरूप जो चीज़ 'खुदापरस्ती' के विश्वास को एक सभ्यता, एक संस्कृति तथा एक जीवन-व्यवस्था के रूप में ढालती है, वह रसूल (सल्ल०) का सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पथ-प्रदर्शन है । उसी के माध्यम से हमें क़ानून मिलता है और वही इस क़ानून के अनुसार जीवन की व्यवस्था स्थापित करता है । इसीलिए तौहीद के बाद रिसालत पर ईमान लाए बिना कोई व्यक्ति व्यवहारतः 'मुस्लिम' नहीं हो सकता ।

इस्लाम में रसूल की हैसियत इस प्रकार स्पष्टतः बयान की गयी है कि हम ठीक-ठीक यह भी जान सकते हैं कि रसूल क्या है ? और यह भी कि वह क्या नहीं है ?

रसूल लोगों को अपना नहीं, बल्कि अल्लाह का बन्दा बनाने के लिए आता है और वह स्वयं भी अपने आपको अल्लाह का बन्दा ही कहता है । नमाज़ में प्रति-दिन कम से कम 17 बार जो कलमा-ए-शहादत पढ़ने की शिक्षा मुहम्मद (सल्ल०) ने मुसलमानों को दी है, उसमें यह वाक्य अनिवार्यतः पढ़ा जाता है कि मैं गवाही देता हूं 'कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं ।'

कुरआन मजीद इस मामले में किसी सन्देह मात्र की गुंजाइश नहीं छोड़ता कि रसूल एक इन्सान है और खुदाई में उसका लेशमात्र भी कोई भाग नहीं है, वह न परामानवीय है, न इन्सानी कमज़ोरियों से उच्चतर है, न अल्लाह के ख़ज़ानों का मालिक है, न ग़ैब का जानने वाला है कि उसको अल्लाह की तरह सब कुछ मालूम हो । वह दूसरों को लाभ पहुंचाने वाला तो दूर की बात, स्वयं अपने लिए भी किसी लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखता । उसका काम संदेश पहुंचा देना है, उसके अधिकार क्षेत्र में किसी को सन्मार्ग पर ले आना नहीं है, न इन्कार करने वालों की जांच-पड़ताल करना और न उन पर अज़ाब नाज़िल कर देना उसके अधिकार में है । वह स्वयं अगर अल्लाह की अवज्ञा करे, या अपनी ओर से कोई चीज़ गढ़ कर अल्लाह से संबंधित कर दे या अल्लाह की वह्य में स्वतः लेशमात्र भी फेर-बदल करने का साहस कर डाले तो वह अल्लाह के अज़ाब से नहीं बच सकता ।

मुहम्मद (सल्ल०) रसूलों में से एक हैं । रिसालत से उच्चतर किसी हैसियत के मालिक नहीं हैं । वह अपने अधिकार से किसी चीज़ को हलाल और किसी को हराम करने या दूसरे शब्दों में अल्लाह की आज्ञा के बिना स्वयं विधाता बन जाने के अधिकारी नहीं हैं । उनका काम उस वह्य का पालन करना है जो उन पर खुदा की तरफ़ से उतरी हो ।

इस तरह इस्लाम ने उन तमाम अतिशयोक्तियों से मानवजाति को बचा लिया जो मुहम्मद (सल्ल०) से पहले आने वाले नबियों के पालनकर्ताओं ने अपने पेशवाओं के हक़ में किये थे, यहां तक कि उनको अल्लाह या उस जैसा या उसकी संतान, या उसका अवतार तक बना डाला था । इस तरह की तमाम अतिशयोक्तियों का निषेध करके इस्लाम ने रसूल की जो अस्ल हैसियत बयान की है, वह यह है–

रसूल पर ईमान लाये बिना कोई व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता । जो व्यक्ति रसूल का आज्ञापालन करता है, वह वास्तव में अल्लाह का आज्ञापालन करता है, क्योंकि अल्लाह ने जो रसूल भी भेजा है, इसीलिए भेजा है कि उसका पालन किया जाए । हिदायत वही पा सकता है जो रसूल का आज्ञापालन करे, रसूल जो हुक्म दे, उसे स्वीकार

करना चाहिए और जिससे मना करे उससे रुक जाना चाहिए। (इस मामले का स्पष्टीकरण स्वयं मुहम्मद सल्ल॰ ने इस प्रकार किया है कि मैं एक शुभ-सूचना देने वाला ही हूं, जो हूक्म मैं तुम्हें धर्म के मामले में दूं, उसका पालन करो और जो बात अपनी राय कहूं तो मैं भी एक इन्सान हूं। अपनी दुनिया के मामलों को तुम अधिक जानते हो।) अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सुन्नत वास्तव में क़ुरआन मजीद के मंशा की व्याख्या है और यह व्याख्या है क़ुरआन मजीद के लेखक की, अर्थात अल्लाह के लिए उनकी व्याख्या अपने पीछे ईश्वरीय प्रमाण-पत्र रखती है, जिससे हटकर कोई व्यक्ति क़ुरआन मजीद की कोई व्याख्या स्वत: करने का अधिकारी नहीं है।

अल्लाह ने रसूल के जीवन को आदर्श जीवन घोषित किया है। कोई व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता, जब तक वह रसूल के निर्णय को न स्वीकार करे। मुसलमानों का यह काम नहीं है कि जिस मामले का निर्णय अल्लाह और उसके रसूल ने कर दिया हो, उसमें वे स्वयं कोई निर्णय करने के अधिकारी हों, बल्कि मुसलमानों का यह काम भी नहीं है कि किसी पेश आने वाले मामले में कोई निर्णय करने से पहले यह देख लें कि अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म इस मामले में क्या है।

उपर्युक्त वर्णन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अल्लाह तआला ने रसूल के माध्यम से इन्सान को केवल एक उच्चतर क़ानून ही नहीं दिया है, बल्कि स्थाई मानदंड भी दिये हैं। क़ुरआन मजीद और सुन्नत में जिस चीज़ को ख़ैर (भलाई) कहा गया है, वह सदा के लिए ख़ैर है, जिस चीज़ को 'शर' (बुराई) कहा गया है, वह हमेशा के लिए 'शर' है, जो चीज़ फ़र्ज़ (अनिवार्य) की गयी है, वह सदा के लिए फ़र्ज़ है, जिस चीज़ को हलाल ठहराया गया है, वह हमेशा के लिए हलाल है और जिसको हराम कहा गया है, वह हमेशा के लिए हराम है।

इस्लाम का तीसरा मूल विश्वास आख़िरत का विश्वास (परलोकवाद) है और इसका महत्व यह है कि इसका इन्कार करने वाला 'काफ़िर' हो जाता है और अल्लाह, रसूल और क़ुरआन किसी चीज़ का न मानना उसे कुफ़्र से नहीं बचा सकता। यह विश्वास प्राय: छह अनिवार्य विचारों पर आधारित है–

(क) संसार में मनुष्य अनुत्तरदायी बनाकर नहीं छोड़ा गया है, बल्कि वह अपने स्रष्टा के सामने उत्तरदायी है। संसार का वर्तमान जीवन वास्तव में इन्सान की आज़माइश और परीक्षा के लिए है। इसकी समाप्ति पर उसे जीवन-कार्यों का हिसाब अल्लाह को देना होगा।

(ख) इस लेखा-जोखा के लिए अल्लाह ने एक समय निश्चित कर रखा है। मानवजाति को विश्व में कार्य करने के लिए जितनी मुहलत देने का अल्लाह निर्णय कर चुका है, उसकी समाप्ति पर प्रलय आएगी, जिसमें संसार की पूरी व्यवस्था नष्ट-विनष्ट हो जाएगी और एक दूसरी विश्व-व्यवस्था नये ढंग की स्थापित की जाएगी। उस नये संसार में वे तमाम लोग दोबारा जीवित करके उठाए जाएंगे, जो आदिकाल से प्रलय तक पैदा हुए थे।

(ग) उस समय उन सबको एक ही समय में अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत किया जाएगा और हर व्यक्ति को अपनी निजी हैसियत में उन कर्मों की जवाबदेही करनी होगी जो उसने स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी पर संसार में किये होंगे।

(घ) वहां अल्लाह केवल अपने निजी ज्ञान के आधार पर निर्णय नहीं कर देगा, बल्कि न्याय की तमाम शर्तें पूरी कर दी जाएंगी। हर व्यक्ति के जीवन-कर्मों का पूरा रिकार्ड बिना घट-बढ़ अदालत के सामने रख दिया जाएगा और अगणित प्रकार की गवाहियां इस बात के प्रमाण में प्रस्तुत कर दी जाएंगी कि उसने खुफ़िया और एलानिया कुछ किया है और किस नीयत से किया है।

(ड़) अल्लाह की अदालत में कोई रिश्वत, कोई अनुचित सिफ़ारिश और कोई सत्य-विरोधी वकालत न चल सकेगी। किसी का बोझ दूसरे पर न डाला जाएगा, कोई क़रीबी नातेदार-रिश्तेदार या मित्र या नेता या मज़हबी पेशवा या मनगढ़ंत उपास्य किसी की सहायता के लिए आगे न बढ़ेगा। इन्सान वहां अकेला बिल्कुल बे-यार व मददगार खड़ा हुआ अपना हिसाब दे रहा होगा और निर्णय मात्र अल्लाह के हाथ में होगा।

(च) निर्णय का पूरा आश्रय इस बात पर होगा कि मनुष्य ने संसार में नबियों की बताई हुई सच्चाई को मानकर और परलोक में अपने उत्तरदायित्व को मानकर ठीक-ठीक अल्लाह की बन्दगी की या नहीं। पहली शक्ल में उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) है और दूसरी शक्ल में नरक।

यह विश्वास तीन प्रकार के व्यक्तियों के जीवन के तरीक़ों को एक-दूसरे से बिल्कुल ही अलग कर देता है । एक प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो आख़िरत (परलोक) को मानते हैं और बस इसी संसार के जीवन को जीवन समझते हैं । वे निश्चित रूप से नेकी-बदी का मानदंड कर्मों के उन परिणामों को ही समझेंगे जो इस संसार में प्रकट होते हैं । यहां जिस कर्म का फल अच्छा या लाभप्रद हो, वह उनके निकट 'भलाई' होती है और जिसका फल बुरा या हानिप्रद होगा वही उनके निकट 'बुराई' होगी बल्कि बहुत बार कर्म-परिणामों की दृष्टि से एक ही चीज़, एक समय में भली और दूसरे समय में 'बुरी' होगी ।

दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं, जो आख़िरत को तो मानते हैं, पर उनको यह भरोसा है कि किसी की सिफ़ारिश अल्लाह की अदालत में उन्हें बचा लेगी या कोई उनके पापों का प्रायश्चित पहले ही दे चुका है, या वे अल्लाह के चहेते हैं, इसलिए उन्हें बड़े से बड़े पापों का दंड भी नाम-मात्र को दिया जाएगा । यह चीज़ आख़िरत के विश्वास के तमाम नैतिक लाभों को नष्ट करके दूसरे प्रकार के लोगों को भी पहले प्रकार के व्यक्तियों की पंक्ति में ले जाती है ।

तीसरे प्रकार के लोग वे हैं, जो आख़िरत के विश्वास को ठीक उस रूप में मानते हैं, जिस रूप में इस्लाम उन्हें प्रस्तुत करता है और किसी प्रायश्चित या अनुचित सिफ़ारिश या अल्लाह से किसी विशेष संबंध के भ्रम में नहीं पड़े हुए हैं । उनके लिए यह विश्वास एक बहुत बड़ी नैतिक शक्ति रखता है । जिस व्यक्ति के अन्तर में अख़िरत का विश्वास अपने विशुद्ध स्वरूप में बैठा हुआ हो, उसका हाल ऐसा होगा, जैसे उसके साथ हर समय एक निगरां लगा हुआ हो, जो हर बुराई के हर इरादे पर उसे टोकता, हर क़दम पर उसे रोकता, और हर कार्य पर उसे फटकारता है । बाहर कोई पकड़ने वाली पुलिस, कोई गवाही देने वाला गवाह, कोई सज़ा देने वाली अदालत और कोई निन्दा करने वाला जन-मत मौजूद हो या न हो, उसके भीतर एक प्रबल जांच-पड़ताल करने वाला हर समय बैठा रहेगा, जिसकी पकड़ के डर से वह कभी एकांत में, या बन में, या अंधेरे में या किसी निर्जन स्थान पर भी अल्लाह के निर्धारित कर्तव्यों से पलायन और उसके बताए अवैध कार्य को करने का हौसला न कर सकेगा और मान लीजिए, यदि कर भी गुज़रे तो बाद में लज्जत होगा और तौबा करेगा । इससे बढ़कर नैतिक सुधार तथा मनुष्य के भीतर एक सुदृढ़ चरित्र पैदा करने का कोई साधन नहीं । ईश्वर का श्रेष्ठतम क़ानून, जो इन्सान को स्थाई मूल्य जुटाता है, उन पर दृढ़ता के साथ इन्सान के जमने और उनसे किसी दशा में उसके न हटने का आश्रय इसी विश्वास पर है । इसीलिए इस्लाम में इसको इतना महत्व दिया गया है कि यदि यह न हो तो अल्लाह और रसूल पर ईमान भी बेकार हैं ।

इस्लाम एक पूरी संस्कृति, एक व्यापक सभ्यता तथा प्रभाव-पूर्ण जीवन-व्यवस्था है तथा मानव-जीवन के तमाम अंगों में नैतिक पथ-प्रदर्शन करता है । इसलिए इसकी नैतिक व्यवस्था वास्तव में संसार-त्यागियों तथा योगियों और सन्यासियों के लिए नहीं है, बल्कि उन लोगों के लिए है जो जीवन के विभिन्न विभागों को चलाते अथवा इनके अन्दर काम करते हैं । नैतिकता की जो ऊंचाइयां संसार, ख़ानक़ाहों, मठों आदि में खोजती थी, इस्लाम उनको जीवन के बीच मंझधार में ले आना चाहता है, उसकी मंशा यह है कि राज्यों के शासक, प्रांतों के राज्य पाल, अदालतों के जज, सेना तथा पुलिस के अधिकारी, संसद-सदस्यों, उद्योगों आदि के स्वामी, कॉलेज तथा युनीवर्सिटियों के अध्यापक तथा छात्र, बच्चों के बाप, बापों के बच्चे, पत्नियों के पति तथा पतियों की पत्नियां, पड़ोसियों के पड़ोसी, तात्पर्य यह है कि सभी इन नैतिक मूल्यों से आभूषित हों । वह चाहता है कि हर घर में भी इसी नैतिकता का चलन हो और मुहल्ले तथा बाज़ार में भी इसी का चलन हो । वह चाहता है कि कारोबारी संस्थाएं तथा सरकारी विभाग उसी का पालन करें, राजनीति, सत्य तथा न्याय पर आधारित हो । जातियां सत्यप्रियता तथा एक दूसरे के अधिकारों का मान-सम्मान करने पर एक दूसरे से मामला करें । युद्ध भी हो तो सौजन्य तथा सभ्यता के साथ हो, न कि भेड़ियों जैसी पशुता के साथ । इन्सान जब सदाचारण अपना ले, अल्लाह के क़ानून को सर्वोपरि मान ले, अल्लाह के सामने अपनी जवाबदेही को याद रखकर स्थायी मूल्यों को पाबन्द हो जाए, तो फिर उसकी यह विशेषता केवल इबादतगाह तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि जिस हैसियत में भी वह संसार के अन्दर काम कर रहा है, ख़ुदा के सच्चे और वफ़ादार बन्दे की तरह ही काम करे ।

"विशेष रूप से सहायता के हक़दार वे निर्धन लोग हैं जो अल्लाह के कार्य में ऐसे घिर गये हैं कि अपने व्यक्तिगत जीविकोपार्जन के लिए धरती में कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते । उनका स्वाभिमान देखकर अनजान आदमी समझता है कि ये संपन्न हैं । तुम उनके चेहरों से उनकी भीतरी हालत पहचान सकते हो । मगर वे ऐसे लोग नहीं हैं कि लोगों के पीछे पड़कर कुछ मांगें । उनकी सहायता में जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह से छिपा न रहेगा ।"

(क़ुरआन, 2:273)

A Well Wisher

NAGPUR

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

❶

अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) के दौरे ख़िलाफ़त में एक बार ग़नीमत के माल में बहुत से क़ीमती कपड़े आये । उसमें ज़री के काम का एक दुपट्टा भी था जो सबसे क़ीमती था । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उपस्थित जनों से पूछा "इस दुपट्टे का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है ?" कुछ लोगों ने राय दी कि आप यह दुपट्टा अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) की पत्नी को दे दीजिए ।

नोट : लोगों ने यह विचार इसलिए व्यक्त नहीं किया था कि हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ख़लीफ़ा के बेटे थे । बल्कि वे एक जलीलुलक़द्र सहाबी थे और अपने इल्म, तक़्वा और परहेज़गारी के मामले में बहुत ऊंचे मक़ाम पर थे और अवाम में बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे । हज़रत उमर (रज़ि॰) कुछ देर तक सोचते रहे फिर बोले :

"नहीं, नहीं मैं यह दुपट्टा उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) को दूंगा । वे इसकी सबसे ज़्यादा हक़दार हैं । क्योंकि उहद की जंग के बाद मैंने आप (सल्ल॰) से सुना था कि उहद के दिन मैं उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) को अपने दायें और बायें लड़ते देखता ।"

यह कहकर उन्होंने वह दुपट्टा हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के पास भेज दिया जो मदीना मुनव्वरा के एक मकान में आप (सल्ल॰) की यादों को दिल में बिठाये अपने ज़िन्दगी की आख़िरी सांसें गिन रही थीं । उनके दिल में आप (सल्ल॰) से बेपनाह मुहब्बत और हक़ की राह में जान दे देने का ऐसा जज़्बा था कि फ़ारूक़ आज़म (रज़ि॰) समेत तमाम सहाबी उनकी इज़्ज़त किया करते थे । इसीलिए उन्हें "ख़ातूने उहद" के नाम से पुकारा जाता था ।

❷

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) का नाम नुसैबा था लेकिन वे उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के नाम से जानी जाती थीं । आपके पिता का नाम काअ्ब बिन अम्र था । आपका ताल्लुक़ क़बीला ख़ज़रज के नज्जार ख़ानदान से था । आप (सल्ल॰) की परदादी (हाशिम बिन अब्द मुनाफ़ की मां) भी इसी ख़ानदान से थीं । यह ख़ानदान शुरू से ही बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था लेकिन आप (सल्ल॰) का ननिहाल होने के कारण उस ख़ानदान की प्रतिष्ठा और बढ़ गयी थी ।

हिजरत के बाद आप (सल्ल॰) जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो हज़रत अय्यूब अंसारी (रज़ि॰) के यहां ठहरे । हज़रत अय्यूब अंसारी (रज़ि॰) उसी नज्जार ख़ानदान के रईस थे । हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) भी उसी ख़ानदान से ताल्लुक़ रखती थीं ।

❸

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) का निकाह ज़ैद बिन आसिम से हुआ जो उनके चचेरे भाई थे । ज़ैद से उनको दो औलादें हुईं–अब्दुल्लाह और हबीब । इन दोनों भाइयों को सहाबी होने का सम्मान प्राप्त है । ज़ैद की मृत्यु के बाद उनकी शादी अरबा बिन अम्र (रज़ि॰) से हुई । इन से भी दो बच्चे तमीम और ख़ौला पैदा हुए ।

हज़रत उम्मे अम्मारा का शुमार अंसार के साबक़ीन अव्वलीन में होता है । वे अपने पूरे परिवार के साथ उस समय इस्लाम क़बूल किया जब हज़रत मसअब बिन उमैर (रज़ि॰) यसरब (मदीना) में इस्लाम के प्रचार-प्रसार में लगे थे ।

सन 13 हिजरी में वे उन पच्छत्तर (75) लोगों में शामिल थीं जिन्होंने उक्बा-ए-कबीर में आप (सल्ल॰) के हाथों पर बैअ्त ली थी और यह संकल्प लिया था कि यदि आप (सल्ल॰) मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाएं तो वे अपनी जानों, मालों और संतानों के साथ आपका साथ देंगे ।

❹

हिजरते नबवी (सल्ल॰) के तीसरे साल उहद की जंग हुई । हज़रत उम्मे अम्मारा जंगे उहद में शामिल थीं और उस अवसर पर उन्होंने जिस साहस और जांबाज़ी का सबूत दिया कि इतिहास में उन्हें "ख़ातूने उहद" लिखा गया । तबक़ात इब्न साअद की रिवायत है कि उस अवसर पर उनके पति

अरबा बिन अम्र (रज़ि॰) और उनके दोनों बड़े बेटे अब्दुल्लाह (रज़ि॰) और हबीब (रज़ि॰) भी शामिल थे ।

जब तक मुसलमानों का पल्ला भारी रहा उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) दूसरी महिलाओं के साथ मशकीज़ों में पानी भर-भरकर ज़ख़्मियों को पिलाती रहीं । लेकिन जब जंग का पांसा पलटा और मुस्लिम सेना बिखड़ने लगी तो उस समय आप (सल्ल॰) के पास गिनती के कुछ लोग मौजूद थे ।

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने जब यह कैफ़ियत देखी तो पानी के मशकीज़े को फेंका और तलवार और ढाल लेकर काफ़िरों पर टूट पड़ीं । काफ़िर बार-बार आप (सल्ल॰) की ओर बढ़ते और हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) अन्य साबित क़दम मुजाहिदीन के साथ मिलकर उन्हें तीरों एवं तलवारों से रोक देतीं । यह बड़ा नाज़ुक वक़्त था और बड़े-बड़े के क़दम उखड़ गये थे । लेकिन यह महिला पहाड़ बनकर मैदाने जंग में डटी हुईं थीं । इतने में एक मुश्रिक ने उनके सिर पर पहुंच कर अपनी तलवार का वार किया । उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने उन्हें अपनी ढाल पर रोका और फिर उसके घोड़े की टांग पर तलवार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि घोड़ा और सवार दोनों ज़मीन पर आ रहे ।

आप (सल्ल॰) ये सब देख रहे थे । आप (सल्ल॰) ने उनके बेटे अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को पुकार कर कहा : "अब्दुल्लाह ! अपनी मां की मदद करो ।" वे तुरंत वहां पहुंचे और तलवार के एक ही वार से उस शहसवार का काम तमाम कर दिया । तभी एक दूसरा मुश्रिक तेज़ी से उधर लपका और हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) का बायां बाज़ू ज़ख़्मी करता हुआ निकल गया । हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने अपने हाथ से अपने बेटे अब्दुल्लाह (रज़ि॰) का ज़ख़्म बांधा और कहा :

"बेटे जाओ और जब तक दम में दम है, लड़ो ।"

यह सुनकर आप (सल्ल॰) अनायास ही कह उठे, "ऐ उम्मे अम्मारा जितनी ताक़त तुम में है, और किसी में कहां होगी ?

इसी बीच वही मुश्रिक जिसने अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को ज़ख़्मी किया था, पलट कर फिर हमलावर हुआ । आप (सल्ल॰) ने पुकार कर कहा, "उम्मे अम्मारा, संभलना, यह वही बदबख़्त है जिसने अब्दुल्लाह को ज़ख़्मी किया था ।" हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) उसकी तरफ़ झपटीं और तलवार का ऐसा भारी वार किया कि वह दो टुकड़े होकर नीचे गिर पड़ा । आप (सल्ल॰) ने यह सब देखा और उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी, और कहा :

"उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ! तूने अपने बेटे का ख़ूब बदला लिया ।"

❺

घमासान युद्ध चल रहा था तभी एक बदबख़्त ने दूर से आप (सल्ल॰) पर एक पत्थर फेंका जो आप (सल्ल॰) के मुंह पर आ लगा और आप (सल्ल॰) के दो दांत शहीद हो गये । फिर इब्न क़ैमिया नाम का एक काफ़िर तेज़ी से घुसता हुआ आप (सल्ल॰) के निकट पहुंच गया और तलवार का एक भरपूर वार किया । आप (सल्ल॰) 'ख़ुद' पहने हुए थे । इब्न क़ैमिया की तलवार ख़ुद पर पड़ी और ख़ुद की दो कड़ियां टूट कर आप (सल्ल॰) के गाल में धंस गयी और ख़ून की धारें फूट निकलीं ।

ये सारी चीज़ें आंख झपकते हो गयीं । उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) बेताब हो गयीं और आगे बढ़कर इब्न क़ैमिया को रोका । इब्न क़ैमिया क़ुरैश का नामी-गिरामी योद्धा था लेकिन हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) उनसे तनिक भी भयभीत न हुईं और पूरी शक्ति से उस पर तलवार से वार किया । लेकिन इब्न क़ैमिया दोहरी ज़िरह पहने हुए था इसलिए इनकी तलवार फ़िसल गयी और इब्न क़ैमिया को पलट कर दोबारा हमला करने का अवसर मिल गया और हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के कंधे पर गहरा ज़ख़्म आ गया जिससे ख़ून का फ़व्वारा फूट पड़ा ।

लेकिन इब्न क़ैमिया भी वहां अब और देर रुकने का साहस न जुटा सका और भाग निकला । हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के ज़ख़्म से तेज़ी से ख़ून रिस रहा था । आप (सल्ल॰) ने उनके घाव पर स्वयं पट्टी बंधवायी और कई बहादुर सहाबियों का नाम ले-लेकर कहा :

"अल्लाह की क़सम, आज उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने उन सबसे बढ़कर बहादुरी दिखायी ।"

उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

(सल्ल॰), मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान, दुआ कीजिए कि जन्नत में भी आपका साथ नसीब हो ।''

आप (सल्ल॰) ने ऊंचे स्वर में यह दुआ मांगी ।

''ऐ अल्लाह इन्हें जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना ।''

हज़रत अम्मारा (रज़ि॰) यह सुनकर ख़ुश हो गयीं और कहा : ''अब मुझे दुनिया में किसी मुसीबत की परवाह नहीं ।''

युद्ध समाप्त हो गया लेकिन आप (सल्ल॰) उस समय तक अपने घर नहीं गये जब तक हज़रत अब्दुल्लाह बिन काअ्ब (रज़ि॰) को भेजकर हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) का हालचाल न मालूम कर लिया । आप (सल्ल॰) कहा करते थे, ''उहद के दिन मैं दाएं-बाएं जिधर भी देखता था उम्मे अम्मारा ही उम्मे अम्मारा दिखायी देती थीं ।''

कहते हैं कि जंगे उहद में हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के शरीर पर बारह घाव लगे थे । अल्लामा इब्न साअ्द (रह॰) का बयान है कि उहद की जंग के बाद उन्होंने बैअ्ते रिज़वान, जंगे ख़ैबर, उमरतुल क़ज़ा और हुनैन की जंग में भी शामिल रहीं । एक-दूसरी रिवायत के अनुसार वे मक्का विजय के मौक़े पर भी आप (सल्ल॰) के साथ थीं ।

❻

सन 11 हिजरी में आप (सल्ल॰) ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ख़लीफ़ा बने तो इर्तिदाद के फ़ित्ने भड़क उठे । मुसैलमा कज़्ज़ाब का फ़ित्ना इसमें सबसे बढ़कर था । उसने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की ज़िन्दगी में ही रसूल होने का दावा पेश किया था । उसने आप (सल्ल॰) को एक पत्र भी लिखा था । वह यमामा के क़बीला बनू हनीफ़ा का रईस था । आप (सल्ल॰) के इन्तिक़ाल के बाद वह ज़बरदस्ती लोगों को अपना अनुयायी बनाने लगा । कुछ ही दिनों में उसने 40 हज़ार सैनिक जमा कर लिए । अब जो व्यक्ति उसके नबी होने का इन्कार करता उस पर वह बहुत ज़ुल्म ढाता ।

उसी ज़माने में हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के बेटे हबीब बिन ज़ैद (रज़ि॰) उनके हाथ पड़ गये । उसने उनसे पूछा :

''मुहम्मद के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?''

''आप (सल्ल॰) ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं ।''

''नहीं, यह कहो मुसैलमा अल्लाह का सच्चा रसूल है ।''

हज़रत हबीब (रज़ि॰) ने उनकी बात ठुकरा दी । मुसैलमा ने अपनी तलवार से उनका एक हाथ शहीद कर डाला और फिर बोला, ''अब मेरी बात मानोगे या नहीं ?''

जवाब था, ''कदापि नहीं ।''

मुसैलमा ने उनका दूसरा हाथ भी शहीद कर डाला । फिर बोला, ''अब भी मेरी रिसालत स्वीकार कर ले तो तुम्हारी जान बच सकती है ।''

''कदापि नहीं, कदापि नहीं ! मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं ।''

यह सुनकर मुसैलमा कज़्ज़ाब ग़ुस्से से पागल हो गया और हज़रत हबीब (रज़ि॰) की बोटी-बोटी अलग कर दी ।

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने जब अपने बेटे की शहादत की ख़बर सुनी तो उसके साबित क़दम रहने पर अल्लाह का शुक्र अदा किया लेकिन दिल ही दिल में पक्का इरादा कर लिया कि वे मुसैलमा से बदला लेकर रहेंगी ।

❼

जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि॰) के नेतृत्व में मुसैलमा की सरकोबी के लिए सेना भेजी तो हज़रत उम्मे अम्मारा भी उसमें शामिल हो गयीं । दोनों सेनाओं के बीच घमासान का रण पड़ा । इस युद्ध में लगभग 1200 मुसलमान मारे गये । जबकि दूसरे पक्ष से मरने वालों की संख्या इससे बहुत ज़्यादा थी ।

अंत में मुसैलमा की सेना पीछे हटी और अपने बाग़, जो कि एक तरह का क़िला था और हदीक़तुर्रहमान के नाम से मशहूर था में घुसकर अन्दर से फाटक बन्द कर लिया । लेकिन हज़रत बराअ् बिन मालिक (रज़ि॰) दीवार फांद कर अन्दर कूद गये और किसी तरह लड़ते-भिड़ते फाटक खोलने में सफल हो गये ।

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) जो शुरू से ही बहादुरी के साथ युद्ध कर रही थीं । कई बार मुसैलमा तक पहुंचने की कोशिश की लेकिन हर बार सैनिकों की टुकड़ी सामने आ जाती थी । आख़िरी बार जब उन्होंने मुसैलमा को देखा तो वह अपने मुरीदों को कुछ हिदायतें दे रहा था । तभी वह उसकी ओर बढ़ीं । उनको कई ज़ख़्म लगे परन्तु वे बढ़ती गयीं । इस कोशिश में उनको ग्यारह ज़ख़्म लगे ।

लेकिन वह अपनी बरछी से मुसैलमा पर वार करना ही चाहती थीं कि इतने में दो हथियार उस पर एक साथ पड़े और वह कटकर घोड़े के नीचे जा पड़ा ।

उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) ने नज़र उठा कर देखा तो अपने बेटे अब्दुल्लाह को खड़े पाया और क़रीब ही वहशी (रज़ि॰) खड़े थे। वहशी ने अपना हथियार मुसैलमा पर फेंका था और अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने उसी वक़्त उस पर तलवार का वार किया था।

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) अपने पुत्र (हबीब रज़ि॰) के क़ातिल और मुसलमानों के बदतरीन शत्रु की मौत पर शुक्र बजा लायीं। अमीर लश्कर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि॰) ने उनके इलाज पर विशेष ध्यान दिया। जल्द ही वे अच्छी भी हो गयीं लेकिन उनका एक हाथ हमेशा के लिए अल्लाह के रास्ते में लग चुका था।

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) के दौरे ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहीं। वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से बहुत प्यार करती थीं और हर वक़्त अपनी जान क़ुरबान करने के लिए तैयार रहती थीं। आप भी उन्हें बहुत मानते थे और कभी-कभी उनके घर भी चले जाया करते थे। एक बार आप (सल्ल॰) उनके घर गये तो उन्होंने आप (सल्ल॰) के सामने खाना पेश किया। आपने कहा, "तुम भी खाओ।" उन्होंने जवाब दिया "या अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! मैं रोज़े से हूं।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "रोज़ादार के सामने कुछ खाया जाए तो फ़रिश्ते उस पर दरूद भेजते हैं।" फिर आप (सल्ल॰) ने उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) के सामने खाना खाया।

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) अक्सर उनकी ख़बरगीरी करने के लिए उनके घर जाया करते थे। हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि॰) से कुछ हदीसें भी रिवायत की गयी है जो उम्मे साद (रज़ि॰), हारिस बिन अब्दुल्लाह (रह॰), उबाद बिन तमीम बिन ज़ैद (रज़ि॰), लैला (कनीज़) (रह॰) और इक्रिमा (रह॰) से मरवी है।

फ़ार्म–4
नियम–8

प्रकाशन	:	'कान्ति', D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक, मुद्रक	:	**मुहम्मद अहमद**
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	फ्लैट नं॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)
सम्पादक	:	**डॉ॰ मुहम्मद अहमद**
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एफ 101, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव-II, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
स्वामित्व	:	**दावत ट्रस्ट (रजि॰)** D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज

चेयरमैन	:	**मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
सेक्रेट्री	:	**जनाब टी॰ आरिफ़ अली** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सदस्य : 1. **जनाब मुहम्मद जाफ़र**, फ्लैट नं॰ 102, दारुस्सलाम, ई-89, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 2. **प्रो॰ के॰ ए॰ सिद्दीक़ हसन**, कदम बोट हाउस, पी॰ओ॰ मेडिकल कॉलेज, कालीकट, केरल-693008, 3. **जनाब नुसरत अली**, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 4. **जनाब एजाज़ अहमद असलम**, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 5. **जनाब मुहम्मद मुज्तबा फ़ारूक़**, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 6. **जनाब रफ़ीक़ अहमद**, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 7. **डॉ॰ वक़ार अनवर**, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 8. **जनाब परवाज़ रहमानी**, डी-160/2 फर्स्ट फ्लोर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 9. **डॉ॰ सैयद क़ासिम रसूल इलयास**, 632/9, ज़ाकिर नगर, नयी दिल्ली-25, 10. **इंजी॰ मुहम्मद सलीम**, डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 11. **जनाब मुहम्मद अहमद**, फ्लैट नं॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

मैं मुहम्मद अहमद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

प्रकाशक, मुद्रक : **मुहम्मद अहमद**

1 मार्च 2019

इस्लाम में सहिष्णुता

■ डॉ॰ अब्दुल मुग़नी

इस्लामी क़ानूनों की रूप-रेखा जो भी हो, और वह अपनी जगह बिल्कुल उचित है, लोगों के आपस में बर्ताव-विशेषकर ग़ैर-मुस्लिमों के साथ बर्ताव-के मामले में इस्लाम अत्यंत सहिष्णुता की शिक्षा देता है । इस संबंध में कुरआन की शिक्षाएं अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण सहिष्णुता, उदारता और विशाल हृदयता पर आधारित हैं । जीवन के सही एवं ग़लत रास्तों की हक़ीक़त स्पष्ट होने के बावजूद घोषित किया जाता है–

''धर्म के विषय में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है ।''
(कुरआन, 2:256)

यहां तक कि बहुदेववादी ईश्वर के अतिरिक्त जिन देवताओं की पूजा करते हैं उन्हें अपशब्द कहने से भी मना किया जाता है–''और (हे ईमान वालो) ये लोग अल्लाह के सिवा जिसको पुकारते हैं उन्हें गालियां न दो ।''
(कुरआन, 6:108)

फिर किताब वाले अर्थात यहूदियों और ईसाइयों से अपील की जाती है कि वे मुसलमानों के साथ एक ऐसी बात पर सहमत हो जाएं जो सबके विश्वास में समान है–

''कहो, हे किताब वालो, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है । वह यह कि हम ईश्वर के सिवा किसी की बन्दगी न करें, उसके साथ किसी को साझी न ठहराएं और हममें से कोई ईश्वर के सिवा किसी को अपना प्रभु न बना ले ।'' (कुरआन, 3:64)

सबसे बढ़कर यह कि मुसलमानों के विरुद्ध विधर्मियों की अत्यंत धार्मिक दुश्मनी और उनके द्वारा इबादत में प्रतिरोध के बावजूद मुसलमानों को निर्देश दिया जाता है कि वे दूसरों की शत्रुता से उत्तेजित होकर न्याय-मार्ग न छोड़ें । लोगों के हर प्रकार के विरोधों के बीच भी नेकी के कामों में उनके साथ सहयोग करें और बुरी बातों में किसी के साथ कोई सहयोग न करें–

''और देखो, एक गिरोह ने जो तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) का रास्ता बन्द कर दिया है, तो इस पर तुम्हारा क्रोध तुम्हें इतना उत्तेजित न कर दे कि तुम भी उनके मुक़ाबले में अनुचित ज़्यादतियां करने लगो । नहीं, जो काम नेकी और ईशपरायणता के हैं उनमें सबको सहयोग दो और जो गुनाह और ज़्यादती के काम हैं उनमें किसी को अपना सहयोग न दो ।'' (कुरआन, 5:2)

धर्म का प्रचार भी हिकमत (सूझ-बूझ) के साथ करने की ताकीद की गयी है–

''हे नबी, अपने प्रभु के मार्ग की ओर बुलाओ हिकमत और सदुपदेश के साथ, और उन लोगों से वाद-विवाद करो तो ऐसे ढंग से जो उत्तम हो ।'' (कुरआन, 16:125)

अनुचित आक्षेपों और आरोपों का जवाब भी सहनशीलता और क्षमा एवं शुभचिंतन से देने का महत्व बताया गया है–

''और हे नबी, भलाई और बुराई समान नहीं हैं । तुम बुराई को उस नेकी से टालो, जो उत्तम हो । तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका वैर था वह आत्मीय मित्र बन गया है ।''
(कुरआन, 41:34)

संधि और मैत्री चाहने वाले विधर्मियों एवं मुशरिकों के साथ सामान्यत: अच्छे बर्ताव की अनुमति एवं महत्व है–

''अल्लाह तुम्हें इस बात से नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ नेकी और इन्साफ़ का बर्ताव करो, जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध नहीं किया है और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला । अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है ।'' (कुरआन, 60:8)

इस्लामी सहिष्णुता का सबसे बड़ा प्रतीक स्वयं तौहीद (एकेश्वरवाद) में विश्वास है, जो एक ईश्वर, एक इन्सान की मौलिक एवं सैद्धांतिक कल्पना के अधीन पूरी मानवता का एकीकरण करके विभिन्न संप्रदायों के बीच भावनात्मक एवं नैतिक एकता की शिक्षा देता है । जैसा कि हम ईश्वरीय आज्ञापालन में किताब वालों (ईसाई, यहूदी) को एक सर्वसम्मत बिन्दु की ओर आने के आह्वान का विश्वास है, जिसके अनुसार बिना किसी भेदभाव के सभी नबियों और रसूलों पर ईमान लाना आवश्यक है । यह मानो विश्व-बंधुत्व की घोषणा है । इसके बाद तौहीद व रिसालत के विश्वासों के इसी व्यापक दृष्टिकोण का यह विशिष्ट वैभव है कि शराफ़त व इज़्ज़त का एक ही मापदंड 'ईश-भय' और परहेज़गारी को बनाकर मानव समता की मान्यता को पुष्ट कर दिया गया है ।

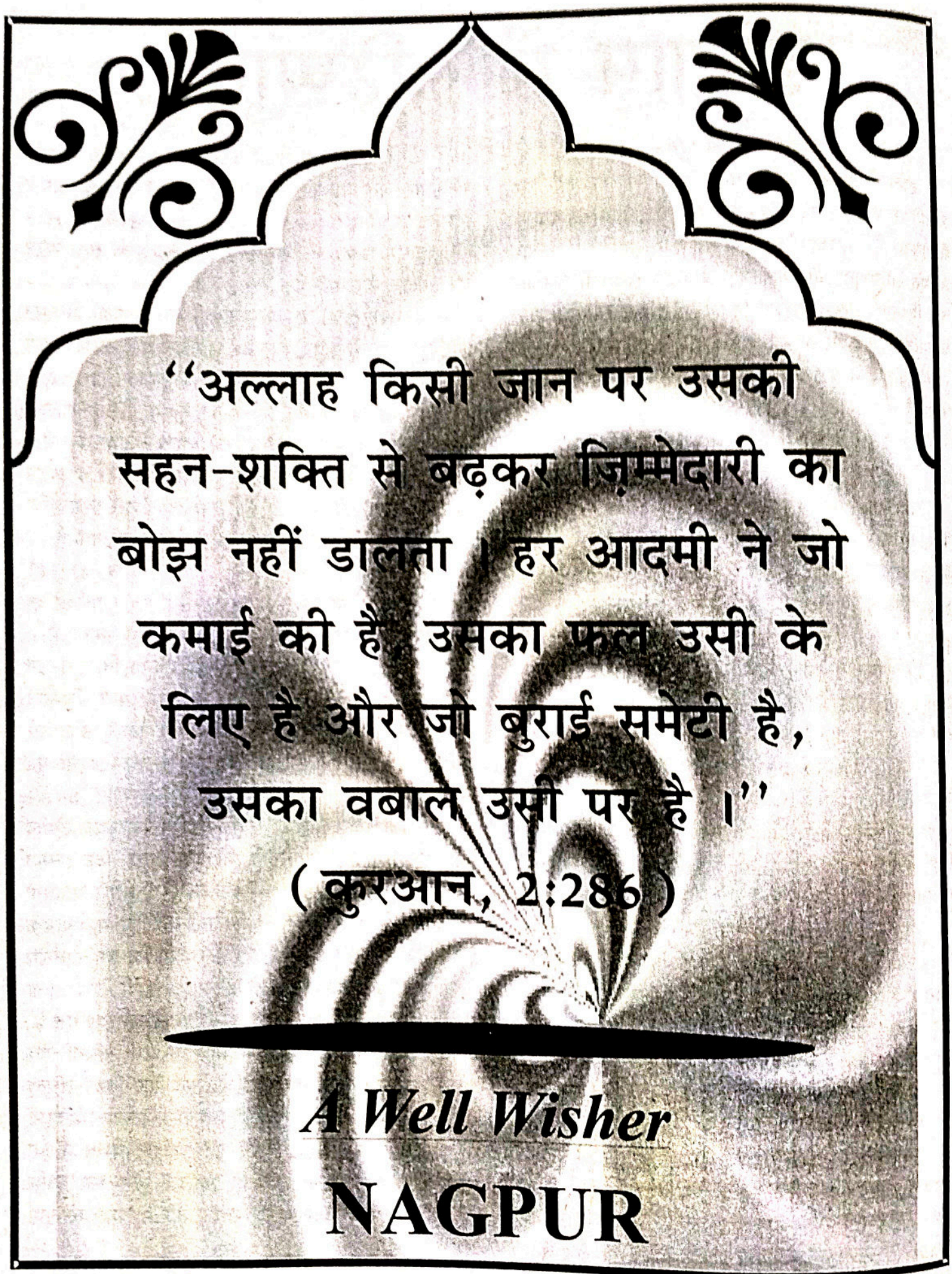
"अल्लाह किसी जान पर उसकी सहन-शक्ति से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। हर आदमी ने जो कमाई की है, उसका फल उसी के लिए है और जो बुराई समेटी है, उसका वबाल उसी पर है।"
(कुरआन, 2:286)
A Well Wisher
NAGPUR

अल्पसंख्यकों के प्रति ज़िम्मेदारी

■ मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

सामान्यत: यह देखा गया है कि अमुक देश का शासन अल्पसंख्यकों के प्रति भेदभाव रखता है और आये दिन इस पर अनेक देशों में हो-हल्ला भी मचता रहता है । लेकिन इस्लामी शासन में समानता का उच्च उदाहरण मिलता है । इस्लामी शासकों की दृष्टि में देश के समस्त नागरिक एक समान थे । उसमें असमानता का तत्व तनिक भी नहीं पाया जाता था । आइये उसी से जुड़ी एक घटना सुनाता हूं ।

एक बार मिस्र के एक ईसाई ने हज़रत अर्फ़ा (रज़ि॰) नामक एक मुसलमान के सामने अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी की और उनके लिए ग़लत शब्दों का प्रयोग किया । हज़रत अर्फ़ा (रज़ि॰) अपने प्रिय जगनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बारे में ऐसे शब्दों को सुन न सके और उसे एक तमाचा मार दिया ।

उस ईसाई ने मिस्र के गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि॰) के समक्ष उनकी शिकायत दर्ज कराई । हज़रत अर्फ़ा (रज़ि॰) को तलब किया गया तो इस पर उनसे सफ़ाई मांगी गयी । हज़रत अर्फ़ा (रज़ि॰) ने सारा वृत्तांत कह सुनाया । इस गवर्नर ने उनसे अल्पसंख्यकों के प्रति नर्मी रखने की नसीहत की और उन्हें याद दिलाया कि हम मुसलमानों ने उनसे उनकी रक्षा का वचन लिया है ।

इस पर हज़रत अर्फ़ा (रज़ि॰) ने कहा कि आपकी बात सही है, लेकिन एक मुसलमान के लिए प्यारे नबी का तिरस्कार असहनशील है । अत: उन्हें इस प्रकार किसी के दिल को ठेस पहुंचाने की आज्ञा नहीं दी गयी है । हां ! हमने इनकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ली है कि यदि कोई शत्रु उन पर आक्रमण करे तो हम उनकी रक्षा करें । उन पर ऐसा बोझ न डालें कि जिसको वह उठा न सकें । गिरजाघर में उन्हें अपने तरीक़े के अनुसार पूजा करने का पूरा अधिकार है । यहां तक कि वह अपने उपासना घर में जिस प्रकार चाहें अपने विचार व्यक्त करें, हम उसमें कदापि हस्तक्षेप नहीं करेंगे ।

एक दौर वह था और एक दौर ये है । अब अल्पसंख्यकों विशेषत: मुसलमानों के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया जाता है । भारत में भी आतंकवाद के नाम पर निर्दोष मुसलमान को जेलों में ठूंसा जाता है और तब तक नहीं छोड़ा जाता जब तक वह किसी काम के न रह जाएं ।

पहले भारतीय मुसलमानों की दुर्दशा के लिए अशिक्षा को ज़िम्मेदार ठहराया जाता था । लेकिन जब मुस्लिम युवाओं ने उच्च शिक्षा ग्रहण करना शुरू किया तो उन्हें आतंकवाद के नाम पर जेलों का एक हिस्सा बना दिया गया । आज भी ये खेल खेला जा रहा है और उन्हें नारकीय जीवन जीने पर विवश किया जा रहा है ।

नब्बे के दशक से इसराईल को जब से भारतीय सरकार ने बढ़ावा दिया है तब से कथित आतंकवाद का दानव विकराल रूप ले रहा है । इसराईल और अमेरिका से यदि भारतीय सरकार संबंध तोड़ ले तो ये आतंकवाद का फ़र्ज़ी बुलबुला तुरंत फूट जाए और पूरे देश में शांति और अमन क़ायम हो जाए ।

ख़ैर ! बात अल्पसंख्यकों की हो रही थी कि इस्लाम ने ही विश्व को सर्वप्रथम बताया कि अल्पसंख्यकों के प्रति प्रशासक वर्ग और बहुसंख्यकों के क्या कर्तव्य हैं । उनके मान-सम्मान की रक्षा के साथ-साथ उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की बात इस्लाम ने ही बतायी है ।

पवित्र हदीस में ग़ैर-मुस्लिम जनता और मुसलमान शासक के बारे में है कि "जो व्यक्ति (शासक) ग़ैर-मुस्लिम प्रजा पर अत्याचार करे या उसके अधिकारों में कटौती करे अथवा उसको अकारण कष्ट दे या उनको नाराज़ करके उसकी चीज़ ले ले तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) क़ियामत (प्रलय) में उस पर मुक़दमा दायर करेंगे ।"

सोचिए ! यदि दुनिया इस्लामी सिद्धांतों पर अमल करे ले तो विश्व में व्याप्त अनेक विसंगतियों से छुटकारा मिल जाए और चैन व सकून की ज़िन्दगी हर किसी के हिस्से में आये ।

हज़रत उसामा इब्ने ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया– "हश्र के दिन एक व्यक्ति दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा, उसकी आंतें बाहर आ जाएंगी और वह जहन्नम में गधे की तरह घूमता फिरेगा । जहन्नम के लोग उसके आसपास इकट्ठा होकर पूछेंगे कि क्या हुआ तुम तो हमें अच्छाइयों की हिदायत देते थे और बुराइयों से रोकते थे ? वह कहेगा कि मैं आप सबको हिदायतें ज़रूर देता था कि भले काम करो और बुराई से बचो पर मैं ख़ुद उस पर अमल नहीं करता था ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher

HYDERABAD

आतंकवाद और धर्म

■ डॉ॰ शेख़ सईद
गंजाम (उड़ीसा)

आतंकवाद इस समय विश्व की सबसे ज्वलंत समस्या है। इसके कारण शांति, सुरक्षा एवं सभ्यता संस्कृति के लिए भयंकर ख़तरा उत्पन्न हो गया है। आज दुनिया में भारत सहित अनेक देश आतंकवाद की इस जटिल समस्या से गंभीर रूप से ग्रस्त और पीड़ित हैं। अब तक काफ़ी तादाद में बेगुनाह व्यक्ति आतंकवाद के कारण अपनी जान गंवा चुके हैं और इसके चलते देखते ही देखते लाखों करोड़ों रुपयों की सरकारी व ग़ैर-सरकारी संपत्ति नष्ट हो चुकी है।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है–आतंकवाद किसी देश में संवैधानिक ढंग से स्थापित और निर्वाचित शासन व्यवस्था का विरोधी रहा है तथा वह समाज में हिंसात्मक उपाय का सहारा लेकर ख़ौफ़, दहशतगर्दी, ख़ून-ख़राबा, लूटपाट और नरसंहार का माहौल पैदा कर अपनी मांगें पूरी करवाने का, अपनी बात मनवाने का, ज़ोर-ज़बरदस्ती का हमेशा से हामी-हिमायती रहा है तथा इसी हिंसक दर्शन का यह पोषक एवं समर्थक रहा है। हिंसा-प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, अपहरण, विमान का अपहरण, वहशीपन, दरिन्दगी और बर्बरता उसकी रग-रग में, उसके मिज़ाज में शामिल और घुली-मिली रही है। वह बैलट के बजाय बुलेट का पक्षधर है।

यह एक स्वाभाविक मनस्थिति है। मनोविज्ञान के अनुसार उपेक्षा, शोषण और उत्पीड़न जैसी परिस्थितियों में क्षुब्धावस्था में व्यक्ति या तो समझौतावादी और भाग्यवादी हो जाता है या आत्महत्या जैसी आत्मघातक कार्रवाइयों पर उतारू हो जाता है अथवा वह हाथ में हथियार उठाकर बग़ावत पर आमादा हो जाता है। देश में आतंकवाद की समस्या को इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य की रोशनी में देखा-समझा जाना चाहिए। मगर हैरत इस बात की है कि आतंकवाद की समस्या को पैदा करने वाली परिस्थितियों पर ग़ौर न कर कभी उसकी संबंध इस्लाम से, कभी मुसलमान से जोड़कर, कभी उसे विदेशी शह पर उत्पन्न बताकर हम असलियत की तरफ़ से आंख मूंदे बैठे हैं। इससे समस्या का सही व स्थायी समाधान नहीं होने वाला है।

यहां एक बात मैं दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूं कि आतंक फैलाने वालों की कोई जाति नहीं होती, उसका कोई मज़हब नहीं होता। उनका अस्ल मज़हब तो आतंक फैलाना होता है। ख़ून-ख़राबा करना होता है। अब वह आतंकवादी मुसलमान हो, हिन्दू हो, सिख हो या कोई और हो। इसमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा है–"मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।" जो व्यक्ति इस प्रकार की वहशियाना हरकतें करता है, निश्चय ही वह समाज का सबसे बड़ा दुश्मन है। वह तो पूरी मानवता पर कलंक है।

अत: आतंकवादियों को किसी मज़हब या जाति से जोड़कर देखना और प्रचारित करना सर्वथा अनुचित एवं हानिकारक है। इससे लोगों में ग़लत संदेश जाता है। जिससे यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है। आतंकवादी को इस्लाम कदापि पसन्द नहीं करता। इस्लाम हमेशा संपूर्ण विश्व में शांति और सहिष्णुता क़ायम करने का प्रयास करता रहा है। आतंकवाद का धर्म से कोई वास्ता नहीं है, क्योंकि

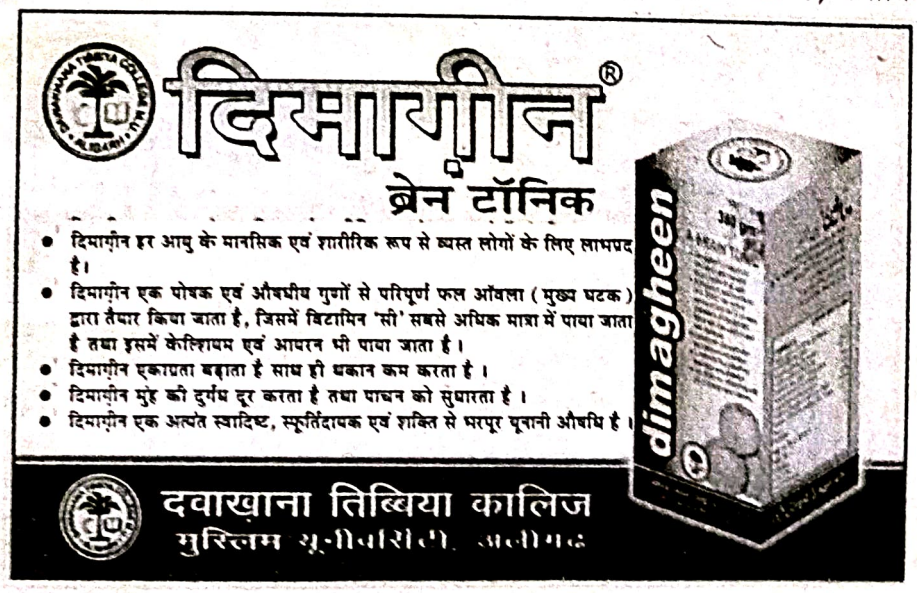

आतंकवाद का संबंध कुत्सित भावना हिंसा, घृणा, नफ़रत एवं दूषित विचारों से है न कि धर्म से । एक शायर के शब्दों में–

हम आह भी करते हैं, तो हो जाते हैं बदनाम
वह क़त्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होता ।

हिन्दी के शब्द 'धर्म' का उपयोग अधिकतर लोग ग़लत करते हैं । 'धर्म' अंग्रेज़ी के शब्द 'रिलीज़न' का पर्याय नहीं है, 'रिलीज़न' का पर्याय है–'संप्रदाय'। धर्म शब्द के अर्थ संप्रदाय से कहीं अधिक व्यापक है । इसका अर्थ कर्तव्य गुण का कुछ मिला-जुला होता है । जैसे आग का धर्म है–जलाना, वायु का धर्म है– सुखाना, पानी का धर्म है–गीला करना आदि । इस शब्द में मनुष्य का कर्तव्य भी निहित है–संबंधियों के प्रति, समाज के प्रति, देश के प्रति, अन्य प्राणियों के प्रति । वस्तुत: धर्म शाश्वत होता है । मीडिया द्वारा आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ा जा रहा है । क्या एल॰टी॰टी॰ई॰ इस्लाम से संबंध रखते हैं ? असम, नगालैंड, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा आदि राज्य आज नक्सलियों से जूझ रहा है । क्या वह इस्लामी आतंकवाद है ? अस्ल बात तो यह है कि इस्लाम और आतंकवाद का दूर-दूर तक भी कोई संबंध नहीं है, क्योंकि इस्लाम का मतलब ही ''शांति'', परंतु यह कहना सार्थक है कि जुल्म, ज़्यादती, संकीर्णता और पक्षपात आतंकवाद के बीज तत्व हैं ।

सच्चाई यह है कि कोई धार्मिक व्यक्ति अमानवीय हरकतें कर ही नहीं सकता । इस्लाम और आतंकवाद एक-दूसरे के विपरीत हैं । इस्लाम का आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है । इस्लाम आतंकवाद करने, यातनाएं देने और भ्रष्टाचार फैलाने की अनुमति नहीं देता । 'इस्लाम' का एक शाब्दिक अर्थ 'शांति' और 'अमन' है ।

अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का कथन है–''संपूर्ण सृष्टि अल्लाह का परिवार है । अत: अल्लाह को सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करे ।''

धरती में उपद्रव और फ़साद फैलाने वाले स्वार्थी तत्वों को क़ुरआन की चेतावनी है–''वह आख़िरत (परलोक) का घर तो हम उन लोगों के लिए आरक्षित कर देंगे, जो धरती में अपनी बड़ाई नहीं चाहते और न बिगाड़ पैदा करना चाहते हैं और परिणाम तो अंतत: डर रखने वालों ही के पक्ष में है ।'' (क़ुरआन, 28:83)

क़ुरआन में स्पष्ट लिखा है–''जिसने किसी व्यक्ति को किसी मनुष्य की हत्या का बदला लेने या धरती में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और कारण से मार डाला, उसने मानो सारे ही मानवों की हत्या कर दी और जिसने किसी के प्राण बचाए, उसने मानो सारे मानवों को जीवन दान किया ।'' (क़ुरआन, 5:32)

आतंकवाद हर लिहाज़ से निंदनीय है । इसके सभी रूपों का समापन होना चाहिए, लेकिन आतंकवाद की समाप्ति के प्रयास में ख़ुद आतंकवादी नहीं बन जाना चाहिए । आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या को समाप्त करने के लिए सभी देशों को मिलकर काम करना होगा । आतंकवाद को शरण और साधन उपलब्ध कराने वाले देशों को वश में करना होगा । आतंकवाद के विरुद्ध नरम रवैया अपनाने या आधे-अधूरे मन से काम करने से कुछ नहीं होगा । इसके विरुद्ध कड़ा रुख़ अपनाना होगा । आतंकवाद मानवता का शत्रु है, सभ्यता-संस्कृति का दुश्मन है । कठोर दमन, निष्पक्ष और न्यायोचित कार्रवाई से ही इस समस्या का अंत हो सकता है । यह तभी संभव है जब आतंक के दानव को अपने मक़सद में कामयाब नहीं होने दिया जाए । किसी निरपराध की हत्या पूरी मानवता की हत्या के सदृश है । समय रहते ही ऐसी घिनौनी सोच को बदलना होगा, वरना देश आतंकवाद की आग में जलकर भस्म हो जाएगा ।

0291-2658786

HOTEL Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

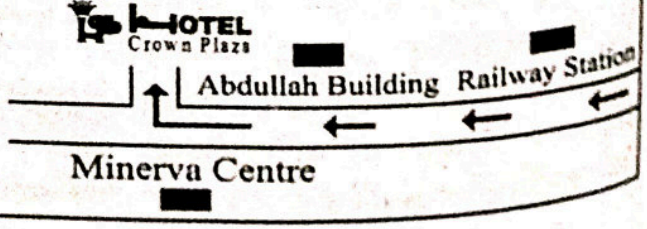

मिठाई वाला

■ भगवती प्रसाद वाजपेयी

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता, "बच्चों को बहलाने वाला, खिलौने वाला ।"

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र किन्तु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार अस्थिर हो उठते । उनके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ उपयुक्त गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती । छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियां चिकों को उठाकर छज्जों के नीचे झांकने लगतीं । गलियों और उनके अन्तर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौने वाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता ।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते । वे पैसे लाकर खिलौने का मोल-भाव करने लगते । पूछते, "इछका दाम क्या है, औल इछका ? औल इछका ?" खिलौने वाला बच्चों को देखता, और उनकी नन्हीं-नन्हीं उंगलियों से पैसे ले लेता, और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता । खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौने वाला उसी प्रकार गाकर कहता—बच्चों को बहलाने वाला, खिलौने वाला । सागर की हिलोर की भांति उसका यह मादक गान गली भर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुंचता, और खिलौने वाला आगे बढ़ जाता ।

राय विजय बहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए ! वे दो बच्चे थे—चुन्नू और मुन्नू ! चुन्नू जब खिलौने ले आया, तो बोला, "मेला घोला कैछा छुन्दल ऐ ।"

मुन्नू बोला, "औल देखो, मेला कैछा छुन्दल ऐ ?"

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर भर में उछलने लगे । इन बच्चों की मां रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही । अंत में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा, "अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए हैं ?"

मुन्नू बोला, "दो पैछे में ! खिलौने वाला दे गया ऐ ।"

रोहिणी सोचने लगी, इतने सस्ते कैसे दे गया है । कैसे दे गया है, यह तो वही जाने । लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है !

एक ज़रा-सी बात ठहरी । रोहिणी अपने काम में लग गयी । फिर कभी उसे इस पर विचार की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती ।

(2)

छह महीने बाद ।

नगर भर में दो-चार दिनों से एक मुरली वाले के आने का समाचार फैल गया । लोग कहने लगे, "भाई वाह ! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है । मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है सो भी दो-दो पैसे । भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा ? मेहनत भी तो न आती होगी !"

एक व्यक्ति ने पूछ लिया, "कैसा है वह मुरली वाला, मैंने तो उसे नहीं देखा !"

उत्तर मिला, "उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा । दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफ़ा बांधता है ।"

"वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था ?"

"क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था ?"

"हां, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था ।"

"तो वही होगा । पर भई, है वह एक उस्ताद ।"

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरली वाले की चर्चा होती । प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता, "बच्चों को बहलाने वाला, मुरली वाला ।"

रोहिणी ने भी मुरली वाले का यह स्वर सुना । तुरंत ही उसे खिलौने वाले का स्मरण हो आया । उसने मन-ही-मन कहा, "खिलौने वाला भी इसी तरह गा-गाकर खिलौने बेचा करता था ।"

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गयी,

''ज़रा उस मुरली वाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूं। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गये हैं।''

विजय बाबू एक समाचार पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाज़े पर आकर मुरली वाले से बोले, ''क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली ?''

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आयी है। इस तरह दौड़ते-हांफते हुए बच्चों का झुंड आ पहुंचा। एक स्वर से सब बोल उठे, ''अम बी लेन्दे मुल्ली, और अम बी लेन्दे मुल्ली।''

मुरली वाला हर्ष से गद्‌गद् हो उठा। बोला, ''देंगे भैया! लेकिन ज़रा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएंगे। बेचने तो आए ही हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन। ...हां, बाबूजी, क्या पूछा था आपने कि कितने में दीं ! ...दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से है, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूंगा।''

विजय बाबू भीतर-बाहर, दोनों रूपों में मुस्कुरा दिए। मन ही मन कहने लगे, कैसा है। देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले, ''तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।''

मुरली वाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला, ''आपको क्या पता बाबूजी कि इनकी अस्ली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज़ क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं—दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे ? लेकिन सच पूछिए तो बाबूजी, अस्ली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरलियां नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हज़ार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।''

विजय बाबू बोले, ''अच्छा, मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं, जल्दी-से दो ठो निकाल दो।''

दो मुरलियां लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुंच गये। मुरली वाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियां बेचता रहा। उसके पास कई रंग की मुरलियां थीं। बच्चे जो रंग पसन्द करते, मुरली वाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

''यह बड़ी अच्छी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक़ तो बस यह है। हां भैए, तुमको वही देंगे। ये लो। ...तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा वही लो। ...ले आए पैसे ? अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही निकाल रखी थी...! तुमको पैसे नहीं मिले ? तुमने अम्मा से ठीक तरह मांगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे मांगे जाते हैं बाबू! हां, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएंगे...। दुअन्नी है ? तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब ? ...मिल गये पैसे ? देखो, मैंने तरकीब बताई ! अच्छा अब तो किसी को नहीं लेना है ? सब ले चुके ? तुम्हारी मां के पास पैसे नहीं हैं ? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूं।''

इस तरह मुरली वाला फिर आगे बढ़ गया।

(3)

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरली वाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करने वाला फेरी वाला पहले कभी नहीं आया। फिर यह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है! भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराए, सो थोड़ा!

इसी समय मुरली वाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा, ''बच्चों को बहलाने वाला, मुरली वाला!'' रोहिणी इसे सुनकर मन ही मन कहने लगी—और स्वर कैसा मीठा है इसका !

बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरली वाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने-के-महीने आए और चले गये। फिर मुरली वाला न आया। धीरे-धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गयी।

(4)

आठ मास बाद—

सर्दी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित। केश-राशि सुखा रही थी। इसी समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा, ''बच्चों को बहलाने वाला, मिठाई वाला।''

मिठाई वाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट-से रोहिणी नीचे उतर आयी। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हां, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट

आकर बोली, "दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा कमरे में चलकर ठहराओ। मैं उधर कैसे जाऊं, कोई आता न हो। ज़रा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूंगी।"

दादी उठकर कमरे में आकर बोलीं, "ए मिठाई वाले, इधर आना।" मिठाई वाला निकट आ गया। बोला, "कितनी मिठाई दूं, मां ? ये नये तरह की मिठाइयां हैं–रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, ज़ायक़ेदार, बड़ी देर तक मुंह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के अलावा ये खांसी भी दूर करती हैं। कितनी दूं ? चपटी, गोल, पहलुदार गोलियां हैं। पैसे की सोलह देता हूं।"

दादी बोलीं, "सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पच्चीस तो देते।"

मिठाई वाला बोला, "नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूं, यह अब मैं तुम्हें क्या...ख़ैर, मैं अधिक न दे सकूंगा।" रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली, "दादी, फिर भी काफ़ी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।"

मिठाई वाला मिठाइयां गिनने लगा।

"तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हां, मैं बूढ़ी हुई, मोल-भाव अब मुझे ज़्यादा करना आता भी नहीं।"

कहते हुए दादी के पोपले मुंह से ज़रा-सी मुस्कुराहट फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा, "दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और भी कभी आए थे या पहली बार आए हो। यहां के निवासी तो तुम हो नहीं।" दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाई वाले ने उत्तर दिया, "पहली बार नहीं, और भी कई बार आ चुका हूं।"

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली, "पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे, या और कोई चीज़ लेकर ?"

मिठाई वाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला, "इससे पहले मुरली लेकर आया था, और उससे भी पहले खिलौने लेकर।"

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली, "इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा ?"

वह बोला, "मिलता भला क्या है ! यही खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हां, संतोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख ज़रूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूं।"

"सो कैसे ? वह भी बताओ।"

"अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूं ? उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आप को दुख ही होगा।"

"जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूं। तुम्हारा हर्जा न होगा। मिठाई मैं और भी कुछ ले लूंगी।"

अतिशय गंभीरता के साथ मिठाई वाले ने कहा, "मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान-व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुन्दरी थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुन्दर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति ! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूं। वे सब अंत में होंगे तो यहीं कहीं। आख़िर, कहीं जन्मे ही होंगे। उस तरह रहता, घुल-घुल कर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूंगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हंस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफ़ी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूं।"

रोहिणी ने अब मिठाई वाले की ओर देखा–उसकी आंखें आंसुओं से तर हैं।

इसी समय चुन्नू-मुन्नू आ गये। रोहिणी से लिपटकर, उसका आंचल पकड़कर बोले, "अम्मां, मिठाई !"

"मुझसे लो।" कहकर, तत्काल काग़ज़ की दो पुड़ियां, मिठाइयों से भरी, मिठाई वाले ने चुन्नू-मुन्नू को दे दीं ! रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाई वाले ने पेटी उठाई, और कहा, "अब इस बार ये पैसे न लूंगा।"

दादी बोली, "अरे-अरे, न-न, अपने पैसे लिए जा भाई !" तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक-मृदुल स्वर में, "बच्चों को बहलाने वाला मिठाई वाला।"

हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "उस पर अल्लाह की रहमत हो जो बेचने, ख़रीदने और दावा करने में दयालुता से काम लेता है ।"

(बुख़ारी)

A Well Wisher

PATNA

कुपोषण को बढ़ाते जंक फूड

मोनिका शर्मा

भारत में खानपान की अस्वस्थ आदतों के चलते बच्चों और युवाओं को घेर रहे जीवन शैली जनित बीमारियां और मोटापा लंबे समय से समाज और सरकार, दोनों के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं । यही वजह है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू॰जी॰सी॰) ने हाल में सभी विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने परिसरों में जंग फूड की बिक्री पर रोक लगाने का निर्देश दिया है ।

यू॰जी॰सी॰ के मुताबिक़ "कॉलेजों में जंग फूड को प्रतिबंधित करना नये मानदंड स्थापित करेगा, छात्रों के जीवन को बेहतर बनाएगा, सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाएगा और उनमें मोटापे को कम करेगा । इतना ही नहीं, जीवन शैली से जुड़े उन रोगों को भी रोकेगा जो मोटापे के कारण होते हैं ।

ग़ौरतलब है कि कुछ समय पहले सी॰बी॰एस॰ई॰ ने भी स्कूली बच्चों की सेहत संभालने के लिए ऐसा ही क़दम उठाया था । इसके तहत सभी संबद्ध स्कूलों को परिसर में मौजूद कैंटीन से जंक फूड हटाने का निर्देश दिया गया था । नयी पीढ़ी के स्वास्थ्य की फ़िक्र करते हुए छात्रों के लंच बॉक्स की जांच करने, पोषक भोजन के बारे में जागरूकता लाने और स्वास्थ्य की नियमित जांच कराने संबंधी गाइडलाइंस भी दी गयी थी ।

इसी कड़ी में कुछ समय पहले बहुत छोटी उम्र के बच्चों को जंक फूड से बचाने के लिए सरकार ने कार्टून चैनलों पर जंक फूड के विज्ञापन नहीं दिखाए जाने का भी फ़ैसला किया था ।

भावी पीढ़ी के स्वास्थ्य को सहेजने के लिए काफ़ी समय से जंक फूड पर पाबंदी लगाने और इसके सेवन से होने वाले नुक़सान को लेकर सजगता लाने के प्रयास किये जा रहे हैं । दरअस्ल, जंक फूड मोटापे और कुपोषण का ख़तरनाक मेल है । पोषक तत्वों की कमी के चलते जंक फूड का सेवन स्वास्थ्य के लिए हर तरह से ख़तरनाक है । लेकिन हालिया बरसों में नयी पीढ़ी में इस तरह के खान-पान का चलन तेज़ी से बढ़ा है ।

नतीजतन, बच्चों और युवाओं में सेहत से जुड़ीं परेशानियां देखने को मिल रही हैं । इस तरह का खान-पान उनकी शारीरिक ही नहीं, मानसिक सेहत पर भी बुरा प्रभाव डाल रहा है । वैज्ञानिक भी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि जंक फूड का सेवन बच्चों को मोटा और आलसी बनाने के साथ ही उनकी कार्यक्षमता भी कम करता है ।

अध्ययन बताते हैं कि बचपन में मोटे रहे लोगों में से पचास से अस्सी फ़ीसदी बड़े होने पर भी मोटापे के शिकार रहते हैं । ध्यान रहे है कि उम्र कोई भी हो लेकिन मोटापा अपने आप में कई दूसरी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की जड़ होता है ।

ज़ाहिर है, इस वजह से कम उम्र में ही सेहत से जुड़ी तमाम परेशानियां भी बढ़ रही हैं । दुनिया भर में सबसे ज़्यादा लोग जंक फूड से बीमार हो रहे हैं । विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक़, यू॰के॰ और यू॰एस॰ए॰ में पचास प्रतिशत व्यस्क और बीस प्रतिशत बच्चे मोटापे के शिकार हैं ।

भारत में हर साल क़रीब एक करोड़ बच्चों में मोटापे के मामले सामने आ रहे हैं । ऐसे ही हालात बने रहे तो 2025 तक भारत बच्चों में मोटापे के मामले में दुनिया में दूसरे स्थान पर होगा । विडंबना है कि आज की जीवन शैली में प्रसंस्कृत पदार्थों ने गहरी पैठ बना ली है । युवाओं और बच्चों में जंक फूड खाने का ख़ूब चाव है, जबकि वसा, नमक और चीनी की अधिकता वाले इन खाद्य पदार्थों का सेवन वाक़ई हानिकारक है ।

ऐसे में शिक्षण संस्थाओं के परिसर में ऐसे खाद्य पदार्थों की सहज उपलब्धता के चलते इनका सेवन करने वाले युवाओं और बच्चों के आंकड़े तेज़ी से बढ़ रहे हैं । स्वास्थ्यवर्धक भोजन से दूर हो रहे बच्चे और युवा हर वक़्त इन खाद्य उत्पादों का सेवन करने लगे हैं । अकेले राजधानी दिल्ली में ही स्कूली बच्चों के भोजन का सत्तर फ़ीसदी हिस्सा जंक फूड होता है । (सा॰ : 'रा॰ सहारा')

साइकिल के लाभ

वर्तमान समय में जबकि पेट्रोल और डीज़ल महंगे हो रहे हैं तथा मोटापा जैसी बीमारियां दिन-प्रतिदिन सामान्य होती जा रही हैं, न केवल आर्थिक बचत तथा प्रदूषण नियंत्रण, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी साइकिल चलाना (साइकिलिंग) लाभदायक है । यह बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक के लिए कारगर है । इससे शरीर को फिट रखा जा सकता है ।

साइकिलिंग से हृदय, धमनियों तथा फेफड़ों में रक्त की संचार प्रक्रिया तीव्र होती है और ये अंग स्वस्थ और मज़बूत बनते हैं तथा इनसे बीमारियां दूर रहती हैं । प्रतिदिन कुछ किलोमीटर साइकिल चलाकर व्यक्ति अपने पैरों की मांस पेशियों को मज़बूत बना सकते हैं । नियमित रूप से साइकिल चलाने से व्यक्ति का स्टेमिना (दमख़म) बढ़िया रहता है ।

मोटापे के शिकार लोगों के लिए भी साइकिल चलाना लाभकारी व्यायाम है । साइकिल को नियमित रूप से चलाकर वे शरीर की चर्बी कम कर सकते हैं तथा मोटापे से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं ।

साइकिलिंग से होने वाला व्यायाम व्यक्ति को तनाव, चिंता तथा अवसाद से मुक्त करता है । इसके अलावा साइकिलिंग रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक है । शारीरिक लाभ के अतिरिक्त साइकिलिंग पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से भी लाभदायक है । इससे किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता तथा इससे पेट्रोल और डीज़ल का व्यय भी आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है ।

● विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



In the Name of Allah, the most Merciful, the Most Kind

Say, He is Allah, the One. Allah is Eternal and Absolute. None is born of Him nor is he Born. and there is none like him (Suratul Ikhlas 112)

With Best Compliments from :

FALCON PUBLISHERS

HYDERABAD . PH:040-66 13 23 66

FALCON'S 40 YEARS SINCE 1977

YES ! THE NAME YOU CAN TRUST - FOR EXCELLENT BOOKS

MEDICAL & POLYTECHNIC BOOKS

- Electrical and Electronics Engineering
- Civil Engineering
- Mechanical Engineering
- Electronics and Communication Engineering
- Computer Engineering
- Mining Engineering

Thank You, friends for making FALCON *fly high and high to give you all-more and more, years after year.....*

FIRST YEAR

SECOND YEAR
III SEMESTER - IV SEMESTER

THIRD YEAR
V SEMESTER
VI SEMESTER

FALCON BOOK HOUSE

BOOKSELLERS & LIBRARY SUPPLIERS

HYDERABAD

Beside Andhra Bank | Women's College Road | ***KOTHI*** | HYDERABAD - 500 095

Ph : 040 - ***66 13 23 44***

VIJAYAWADA

Shaik Jani Street | Eluru Road | ***ARUNDALPET*** | Vijayawada - 520 002

Ph : 0866 - ***66 3 77 88***

FALCON - *Lives up to its promised dream of bringing Good Books for Polytechnic Students*

Posted on 20-21 February 2019
March 2019
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.02.2019
Total pages 52 with Cover

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) की आज्ञा का पालन करे और अल्लाह से डरे और उसकी सीमाओं का ख़्याल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।
(क़ुरआन, 24:52)

Best compliments from :
PROP. AZIZUR RAHMAN

City Makers



फ्लैट एवं मकान ख़रीदने के लिए

Tel. : 22851438
22045328

Contact :
City Maker Builder Pvt. Ltd.
6/D, Metro House, Near Regal Cinema,
Kolaba, Mumbai-400001 (Maharashtra)